नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 101
दि. 12.01.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

मुंबई के भविष्य का खाका: महायुति के वचननामे में विकास, सुरक्षा और स्वाभिमान का दावा

(जीएनएस)। मुंबई। मुंबई महानगरपालिका चुनाव की आहट के साथ ही सियासी सरगर्मी तेज हो गई है और इसी क्रम में महायुति ने अपने बहुप्रतीक्षित चुनावी घोषणापत्र 'वचननामा' के जरिए मुंबई के भविष्य की तस्वीर पेश करने का प्रयास किया है। भाजपा, शिवसेना और आरपीआई के इस गठबंधन ने साफ शब्दों में कहा है कि यह घोषणापत्र केवल चुनावी वादों का दस्तावेज नहीं, बल्कि अगले पांच वर्षों में मुंबई को अंतरराष्ट्रीय स्तर का शहर बनाने का संकल्प है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने संयुक्त रूप से इस वचननामे का अनावरण करते हुए दावा किया कि महायुति का ट्रैक रिकॉर्ड उसके वादों की विश्वसनीयता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि मुंबई केवल इमारतों और सड़कों का शहर नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के सपनों और संघर्षों का केंद्र है। उन्होंने स्पष्ट किया कि महायुति की प्राथमिकता यही है कि मुंबईकरों को मजबूरी में शहर छोड़कर न जाना पड़े। उन्होंने कहा कि कुछ लोग केवल बातें करते रहे, जबकि हमने जमीन पर काम करके दिखाया है। बीडीडी चाल पुनर्विकास, अभ्युदय नगर और विशाल सह्याद्री नगर जैसी परियोजनाएं इसका उदाहरण हैं। उन्होंने यह भी कहा कि मुंबई की भौगोलिक और तकनीकी समस्याओं, जैसे एयरपोर्ट के आसपास की ऊंचाई और फनेल जोन की दिक्कतों पर भी गंभीरता से काम किया जा रहा है और समाधान खोजे जा रहे हैं। हायुति के वचननामे में सबसे बड़ा जोर बुनियादी सुविधाओं पर दिया गया है। गठबंधन ने वादा किया है कि अगले पांच वर्षों तक पानी के कर में किसी भी तरह की बढ़ोतरी नहीं की जाएगी, जिससे आम मुंबईकर को बड़ी राहत मिलेगी। इसके साथ ही हर वार्ड में पर्याप्त दबाव के साथ रोजाना पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने का संकल्प लिया गया है। भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए गारगाई,

पिंजाल और दमनगंगा जैसी महत्वाकांक्षी जल परियोजनाओं को युद्धस्तर पर पूरा करने की बात कही गई है, ताकि मुंबई को पानी की किल्लत से स्थायी राहत मिल सके। बारिश के मौसम में जलभराव की समस्या को खत्म करने के लिए ड्रेनेज और सीवरेज सिस्टम को आधुनिक बनाने का वादा भी किया गया है।

महिला सशक्तिकरण को वचननामे का एक अहम स्तंभ बताया गया है। महायुति ने घोषणा की है कि बेस्ट बसों में महिलाओं को 50 प्रतिशत किराया छूट दी जाएगी, जिससे कामकाजी महिलाओं, छात्राओं और गृहिणियों को सीधा लाभ मिलेगा। इसके साथ ही 'लाड़ली बहनों' को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से लघु उद्योग शुरू करने के लिए पांच लाख रुपये तक का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराने का वादा किया गया है। गठबंधन का कहना है कि आर्थिक स्वतंत्रता ही महिलाओं को वास्तविक सशक्तिकरण की ओर ले जाती है और यह योजना उसी दिशा में एक मजबूत कदम होगी। आवास और पुनर्विकास को लेकर भी महायुति ने बड़े दावे किए हैं। मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि पहले के दौर में डेवलपर्स 20-20 साल तक लोगों को उनके घर नहीं देते थे, लेकिन अब यह व्यवस्था बदली जाएगी। एमएचएडीए के माध्यम से पुनर्विकास किया जाएगा और डेवलपर्स की जवाबदेही तय होगी। धारावी पुनर्विकास परियोजना के तहत धारावी में ही 350 वर्ग फुट तक के घर देने का वादा किया गया है, ताकि लोगों को अपने इलाके से विस्थापित न होना पड़े। झुग्गीवासियों को सम्मानजनक आवास और बुनियादी सुविधाएं देने के साथ-साथ स्लम रिहैब प्रोजेक्ट्स में पारदर्शिता और तेज मंजूरी की बात भी घोषणापत्र में शामिल है।

सार्वजनिक परिवहन को मुंबई की जीवनरेखा बताते हुए महायुति ने मेट्रो नेटवर्क के विस्तार और बेहतर लास्ट-माइल कनेक्टिविटी पर विशेष जोर दिया है। बेस्ट बस सेवाओं को मजबूत करने के लिए फ्लीट को 5,000 से बढ़ाकर 10,000 करने और 2029 तक सभी बेस्ट बसों को इलेक्ट्रिक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। स्मार्ट ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम के जरिए सड़कों पर भीड़ कम करने और यात्रा को सुगम बनाने की योजना भी वचननामे का हिस्सा है। इसके साथ ही सड़कों पर डिजिटल कार्ड और स्मार्ट तकनीक के इस्तेमाल की बात कही गई है, जिससे यातायात व्यवस्था अधिक पारदर्शी और कुशल बन सके।

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार को लेकर महायुति ने बीएमसी अस्पतालों और डिस्पेंसरी को आधुनिक सुविधाओं से लैस करने का वादा किया है। शहरी गरीबों के लिए सस्ती, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करने की बात कही गई है, ताकि इलाज के अभाव में किसी की जान न जाए। स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को भी घोषणापत्र में प्रमुखता दी गई है। ठोस कचरा प्रबंधन, वैज्ञानिक निपटान और सार्वजनिक स्वच्छता को प्राथमिकता देने के साथ-साथ मुंबई के तटीय क्षेत्रों और खुले स्थानों के संरक्षण का संकल्प लिया गया है।

युवाओं और तकनीक के क्षेत्र में भी महायुति ने कई नई पहलों की घोषणा की है। 'जेन जेड इंटर्नशिप प्रोग्राम' शुरू करने का वादा किया गया है, ताकि युवा नीति निर्माण और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी कर सकें। स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने के लिए 100 करोड़ रुपये का विशेष फंड बनाया जाएगा। हर वार्ड में 24 घंटे खुले, वातानुकूलित और वाई-फाई युक्त स्टडी रूम स्थापित करने की योजना है, जिससे छात्रों और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं को लाभ मिलेगा। इसके अलावा विदेश में पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए 'मुंबई रत्न' स्कॉलरशिप योजना शुरू करने की बात कही गई है।

सुरक्षा और आंतरिक स्थिरता को लेकर महायुति ने कड़ा रुख अपनाया है। घोषणापत्र में मुंबई को रोहिंग्या और अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों से पूरी तरह मुक्त करने का वादा किया गया है। गठबंधन का कहना है कि यह कदम न केवल सुरक्षा की दृष्टि से जरूरी है, बल्कि शहर के जनसांख्यिकीय संतुलन और संसाधनों पर दबाव कम करने के लिए भी अहम है। प्रशासन को पारदर्शी और भ्रष्टाचार मुक्त बनाने के लिए ई-गवर्नेंस को बढ़ावा देने और वार्ड स्तर पर विकेंद्रीकृत निर्णय प्रक्रिया लागू करने की बात भी कही गई है।

आतंक के खिलाफ दिखावा, भीतर से वही पुरानी साजिशें पाकिस्तान की दोहरी नीति एक बार फिर बेनकाब

(जीएनएस)। श्रीनगर से लेकर वाशिंगटन तक इन दिनों पाकिस्तान खुद को आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक साझेदार के रूप में पेश करने की कोशिश में जुटा है। अमेरिका के साथ शुरू की गई दो हफ्ते की संयुक्त काउंटर-टेररिज्म ड्रिल इसी कोशिश का ताजा उदाहरण है। आधिकारिक बयानबाज़ी में इसे वैश्विक सुरक्षा के लिए सहयोग बताया जा रहा है, लेकिन जमीनी हकीकत इससे बिल्कुल उलट तस्वीर पेश करती है। जिस समय पाकिस्तान अमेरिकी सेना के साथ आतंकवाद विरोधी अभ्यास कर रहा है, उसी समय भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार जम्मू-कश्मीर में बड़ी संख्या में आतंकी सक्रिय हैं, जिनमें बहुसंख्यक पाकिस्तानी नागरिक हैं। यह विरोधाभास पाकिस्तान की उसी पुरानी दोहरी नीति की ओर इशारा करता है, जिसमें वह एक ओर आतंकवाद के खिलाफ होने का दावा करता है और दूसरी ओर आतंक को पनाह देता रहता है।

भारतीय खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों की रिपोर्ट बताती है कि जम्मू-कश्मीर में इस समय कुल 131 आतंकी सक्रिय हैं, जिनमें 122 पाकिस्तानी और 9 स्थानीय आतंकी शामिल हैं। यह आंकड़ा सिर्फ संख्या नहीं है, बल्कि पाकिस्तान की नीयत का सबूत है। खासतौर पर जम्मू क्षेत्र में हालात फिर से चिंताजनक होते दिख रहे हैं। पीर पंजाल के दक्षिणी हिस्सों में आतंकवादी नेटवर्क को दोबारा खड़ा करने की लगातार कोशिशें हो रही हैं। छोटे-छोटे आतंकी मॉड्यूल बनाए जा रहे हैं, जिन्हें सीमा पार से प्रशिक्षित और निर्देशित किया जा रहा है। यह वही इलाका है, जहां पिछले कुछ वर्षों में शांति और विकास की रफ्तार बढ़ी थी, लेकिन अब पाकिस्तान समर्थित आतंकी संगठनों की गतिविधियां फिर से सिर उठाने लगी हैं।

पाकिस्तान और अमेरिका के बीच शुरू हुआ यह संयुक्त अभ्यास पंजाब स्थित नेशनल काउंटर टेररिज्म सेंटर में हो रहा है, जिसे 'इंस्पायर्ड गैम्बिट 2026' नाम दिया गया है। आधिकारिक तौर पर कहा जा रहा है कि इसका उद्देश्य शहरी इलाकों में आतंकवाद विरोधी अभियानों की क्षमता बढ़ाना और दोनों सेनाओं के बीच आपसी तालमेल को मजबूत करना है। कागजों में यह अभ्यास जितना आकर्षक दिखता है, उतना ही संदिग्ध इसका समय और संदर्भ है। जिस पाकिस्तान की जमीन से आज भी लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिज्बुल मुजाहिदीन जैसे आतंकी संगठनों की सोच और संरचना को पोषण मिलता है, वही पाकिस्तान दुनिया को यह संदेश देना चाहता है कि वह आतंकवाद के खिलाफ अग्रिम पंक्ति में खड़ा है।

भारतीय सुरक्षा बलों के लिए यह स्थिति नई नहीं है। नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा पर घुसपैठ की कोशिशें लगातार जारी हैं। हाल के महीनों में ड्रोन के जरिए हथियार, गोला-बारूद और विस्फोटक गिराने की कई घटनाएं सामने आई हैं। ये ड्रोन पाकिस्तान की सरजमीं से उड़ान भरते हैं और भारत के भीतर आतंकी नेटवर्क को मजबूत करने की कोशिश करते हैं। यही नहीं, आतंकियों को स्थानीय मदद उपलब्ध कराने के लिए ओवर ग्राउंड वर्कर्स का जाल भी फैलाया जा रहा है। ऐसे में पाकिस्तान का अमेरिका के साथ काउंटर-टेरर ड्रिल करना केवल एक कूटनीतिक नाटक से ज्यादा कुछ नहीं लगता। सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि पाकिस्तान की यह रणनीति उसकी अंतरराष्ट्रीय मजबूरियों से जुड़ी हुई है। आर्थिक संकट, अंतरराष्ट्रीय कर्ज, और एफएटीएफ जैसी संस्थाओं की निगरानी ने पाकिस्तान को वैश्विक मंच पर सफाई देने के लिए मजबूर कर दिया है। अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ ऐसे सैन्य अभ्यास पाकिस्तान को यह मौका देते हैं कि वह खुद को जिम्मेदार और सहयोगी राष्ट्र के रूप में पेश कर सके। लेकिन सवाल यह है कि क्या केवल अभ्यास और बयानबाज़ी से जमीनी सच्चाई बदल जाती है? भारत का अनुभव बताता है कि पाकिस्तान की नीति में मूलभूत बदलाव के कोई संकेत अब तक नजर नहीं आए हैं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद हालात और स्पष्ट हो गए हैं। इस ऑपरेशन में भारत ने आतंकवादी ढांचे के खिलाफ सटीक और प्रभावी कार्रवाई की थी, जिससे पाकिस्तान समर्थित नेटवर्क को बड़ा झटका लगा। इसके बावजूद पाकिस्तान ने अपनी जमीन पर सक्रिय आतंकी ढांचे को पूरी तरह खत्म करने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया। उलटे, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर वह खुद को आतंकवाद का शिकार और विरोधी बताने में जुटा रहा। यह वही दोहरापन है, जिसे भारत लंबे समय से उजागर करता आ रहा है।

केरल की शांति के पीछे छिपा खतरा, निर्णायक नेतृत्व की जरूरत : अमित शाह

(जीएनएस)। नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने केरल की राजनीति और वहां की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर रविवार को बेहद सख्त और स्पष्ट शब्दों में अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि ऊपर से शांत और व्यवस्थित दिखने वाला केरल भीतर ही भीतर ऐसे खतरों को पाल रहा है, जो आने वाले समय में न सिर्फ राज्य बल्कि पूरे देश की सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन सकते हैं। अमित शाह ने यह भी दो टूक कहा कि केरल को इस खतरे से बाहर निकालने और उसे सुरक्षित तथा विकसित बनाने की क्षमता केवल राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन यानी एनडीए में है, जबकि राज्य की सत्ताधारी लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट और विपक्षी यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट दोनों ही इस मोर्चे पर विफल साबित हुए हैं।

केरल कौमुदी द्वारा आयोजित एक कॉन्क्लेव को संबोधित करते हुए गृह मंत्री ने कहा कि केरल की कानून-व्यवस्था को लेकर अक्सर यह धारणा बनाई जाती है कि वहां हालात सामान्य हैं और सामाजिक सौहार्द कायम है, लेकिन यह तस्वीर अधूरी है। उन्होंने कहा कि कई बार सबसे बड़ा खतरा वही होता है जो दिखाई नहीं देता। केरल में भी कुछ ऐसे तत्व सक्रिय हैं, जो परदे के पीछे रहकर अपनी जड़ें मजबूत कर रहे हैं। जब तक इन अदृश्य खतरों को पहचाना नहीं जाएगा और उनके खिलाफ निर्णायक कार्रवाई नहीं होगी, तब तक राज्य की वास्तविक सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती।

अमित शाह ने अपने भाषण में सत्ताधारी एलडीएफ और विपक्षी यूडीएफ दोनों पर एक साथ हमला बोलते हुए कहा कि इन दोनों गठबंधनों की राजनीति वोट बैंक के इर्द-गिर्द घूमती है। उन्होंने आरोप लगाया कि कट्टरपंथी संगठनों को लेकर इन दलों का रवैया हमेशा दोहरा रहा है। एक ओर वे सार्वजनिक मंचों पर शांति और सद्भाव की बात करते हैं, दूसरी ओर पर्दे के पीछे ऐसे संगठनों के प्रति नरमी बरतते हैं, क्योंकि उन्हें डर रहता है कि सख्त रुख अपनाने से उनका वोट बैंक खिसक सकता है। गृह मंत्री ने कहा कि जब राजनीति तुष्टीकरण के रास्ते पर चल पड़ती है, तब सुरक्षा सबसे पहले खतरे में आती है।

उन्होंने पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया और जमात-ए-इस्लामी जैसे संगठनों का जिक्र करते हुए कहा कि केंद्र सरकार ने देश की सुरक्षा को सर्वोपरि मानते हुए इन पर प्रतिबंध लगाया। अमित शाह ने कहा कि पीएफआई पर बैन कोई आसान फैसला नहीं था, लेकिन यह जरूरी था। उन्होंने बताया कि इस संगठन का नेटवर्क देश के कई हिस्सों में फैल चुका था और इसके कैडर कट्टरपंथी गतिविधियों में सक्रिय थे। बैन के बाद जब उसके पूरे ढांचे पर कार्रवाई हुई और कैडर को सलाखों के पीछे भेजा गया, तब जाकर देश ने राहत की सांस ली। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह फैसला न केवल कानून-व्यवस्था के लिहाज से, बल्कि देश के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए भी अहम था।

गृह मंत्री ने आरोप लगाया कि पीएफआई पर प्रतिबंध के समय केरल की एलडीएफ और यूडीएफ सरकारों का रुख बेहद संदिग्ध रहा। उन्होंने न तो खुलकर इस फैसले का समर्थन किया और न ही खुला विरोध, बल्कि चुप्पी साधे रखी। अमित शाह के मुताबिक यह चुप्पी ही उनके असली इरादों को उजागर करती है। उन्होंने कहा कि अगर कोई सरकार या राजनीतिक दल वास्तव में कट्टरपंथ के खिलाफ होता है, तो वह ऐसे फैसलों पर स्पष्ट और मजबूती से अपनी बात रखता है। आधे-अधूरे समर्थन और मौन का मतलब यही होता है कि कहीं न कहीं राजनीतिक मजबूरियां आड़े आ रही हैं।

अमित शाह ने अपने संबोधन में इस बात पर भी जोर दिया कि सुरक्षा और विकास एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। उन्होंने कहा कि जब तक किसी राज्य में सुरक्षा का मजबूत वातावरण नहीं होगा, तब तक वहां टिकाऊ विकास संभव नहीं है। उद्योग, निवेश, पर्यटन और रोजगार सभी तभी फलते-फूलते हैं, जब लोगों को यह भरोसा हो कि उनका जीवन, उनकी संपत्ति और उनका भविष्य सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि केरल जैसे शिक्षित और संभावनाओं से भरे राज्य में अगर सुरक्षा को नजरअंदाज किया गया, तो यह पूरे देश के लिए नुकसानदेह होगा।

गृह मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य का जिक्र करते हुए कहा कि इस सपने को साकार करने के लिए हर राज्य का विकसित होना जरूरी है और केरल इसमें अहम भूमिका निभा सकता है। उन्होंने कहा कि केरल के पास मानव संसाधन, शिक्षा, स्वास्थ्य और प्राकृतिक सौंदर्य जैसी कई ताकतें हैं, लेकिन इनका पूरा लाभ तभी मिल सकता है जब राज्य पूरी तरह सुरक्षित हो। अमित शाह ने यह भी कहा कि एनडीए की सोच विकास को तुष्टीकरण से ऊपर रखती है और इसी वजह से जहां-जहां एनडीए को मौका मिला है, वहां सुरक्षा के साथ-साथ विकास भी देखने को मिला है।

'डील नहीं तो पतन तय': ट्रंप की क्यूबा को खुली चेतावनी, तेल और डॉलर हथियार बनाकर बढ़ाया दबाव

(जीएनएस)। वॉशिंगटन। अमेरिकी राजनीति और वैश्विक कूटनीति में एक बार फिर डोनाल्ड ट्रंप के तीखे और सीधे संदेश ने हलचल मचा दी है। वेनेजुएला में अमेरिकी ऑपरेशन के कुछ ही दिनों बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अब क्यूबा को लेकर बेहद सख्त रुख अपनाते हुए साफ शब्दों में चेतावनी दी है कि यदि हवाना ने जल्द अमेरिका के साथ समझौता नहीं किया, तो उसे तेल और आर्थिक मदद से पूरी तरह वंचित कर दिया जाएगा। ट्रंप ने यह संदेश अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'ट्रुथ सोशल' पर जारी किया, जो अब उनकी विदेश नीति के तीखे ऐलानों का प्रमुख मंच बन चुका है। अपने पोस्ट में ट्रंप ने लिखा कि क्यूबा को अब अमेरिका से "एक बूंद तेल या एक डॉलर भी नहीं मिलेगा" और बहुत देर होने से पहले उसे डील कर लेनी चाहिए। यह बयान महज कूटनीतिक दबाव नहीं, बल्कि आर्थिक नाकेबंदी की खुली धमकी के रूप में देखा जा रहा है। ट्रंप का दावा है कि क्यूबा लंबे समय से वेनेजुएला से मिलने वाले तेल और आर्थिक सहयोग पर निर्भर रहा है और अब जब अमेरिका ने वेनेजुएला के खिलाफ बड़ा कदम उठाया है, तो क्यूबा की स्थिति और भी कमजोर हो गई है।

दरअसल, यह पूरा घटनाक्रम वेनेजुएला में हुए हालिया अमेरिकी ऑपरेशन के बाद तेजी से बदला है। इस ऑपरेशन के बाद क्यूबा के राष्ट्रपति मिगुएल डियाज कैनेल ने अमेरिका की कड़ी आलोचना की थी और इसे अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन बताया था। ट्रंप ने इसी आलोचना के जवाब में और भी आक्रामक लहजा अपनाया। उन्होंने एक सोशल मीडिया पोस्ट को साझा करते हुए यह तक लिख दिया कि मार्को रुबियो क्यूबा के राष्ट्रपति बनेंगे, जिस पर उन्होंने टिप्पणी की, "यह मुझे अच्छा लगता है।" हालांकि व्हाइट हाउस या अमेरिकी प्रशासन की ओर से इस तरह की किसी आधिकारिक योजना की पुष्टि नहीं की गई है, लेकिन ट्रंप की इस टिप्पणी ने क्यूबा और अमेरिका के रिश्तों में नई बेचैनी जरूर पैदा कर दी है।

हवाना में हालात पहले से ही तनावपूर्ण हैं। शनिवार को क्यूबा की राजधानी में अमेरिकी दूतावास के सामने हजारों लोगों की भीड़ को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति डियाज कैनेल ने अमेरिका पर 'स्टेट टेररिज्म' यानी राज्य प्रायोजित आतंकवाद का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने वेनेजुएला जैसे शांत देश पर हमला किया, वहां के राष्ट्रपति को गिरफ्तार किया और यह सब अंतरराष्ट्रीय कानूनों के खुले उल्लंघन के तहत किया गया। क्यूबा का तर्क है कि अमेरिका का यह आक्रामक रवैया न केवल लैटिन अमेरिका की संप्रभुता के खिलाफ है, बल्कि पूरे क्षेत्र में अस्थिरता को बढ़ावा देने वाला है।

क्यूबा और वेनेजुएला के रिश्ते दशकों पुराने हैं और यह संबंध केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि आर्थिक और मानवीय सहयोग पर भी आधारित हैं। क्यूबा अपनी कुल तेल जरूरतों का लगभग 30 प्रतिशत वेनेजुएला से हासिल करता है। बदले में क्यूबा हजारों डॉक्टर, नर्स और मेडिकल स्टाफ वेनेजुएला भेजता है, जो वहां की स्वास्थ्य व्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि अगर वेनेजुएला से तेल की आपूर्ति किसी भी कारण से बाधित होती है, तो क्यूबा में पहले से जारी बिजली संकट और ज्यादा गंभीर हो सकता है। लंबे पावर कट, ईंधन की कमी और आर्थिक दबाव पहले ही आम क्यूबाई नागरिकों के जीवन को मुश्किल बना चुके हैं। इस पूरे परिदृश्य में एक और सनसनीखेज दावा सामने आया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की सुरक्षा में क्यूबा के एजेंट भी तैनात थे और अमेरिकी ऑपरेशन के दौरान 32 क्यूबाई सैनिक मारे गए। हालांकि क्यूबा सरकार ने इन आंकड़ों की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है, लेकिन इन खबरों ने हवाना में सरकार पर आंतरिक दबाव जरूर बढ़ा दिया है।

आसमान में भारत की नई निगाह: 'अन्वेषा' के साथ निगरानी और सुरक्षा के नए युग में प्रवेश

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत के अंतरिक्ष अभियान में 12 जनवरी 2026 का दिन एक ऐसे मोड़ के रूप में दर्ज होने जा रहा है, जो न केवल तकनीकी उपलब्धि का प्रतीक होगा, बल्कि देश की सुरक्षा, रणनीतिक निगरानी और वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में भारत की स्थिति को भी नई ऊंचाई देगा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इस दिन अपने बहुप्रतीक्षित पीएसएलवी-C62 मिशन के जरिए अत्याधुनिक पृथ्वी अवलोकन उपग्रह EOS-N1 को अंतरिक्ष में स्थापित करने जा रहा है, जिसे 'अन्वेषा' नाम दिया गया है। यह मिशन वर्ष 2026 के लॉन्च कैलेंडर की शुरुआत है, लेकिन इसका महत्व केवल एक लॉन्च तक सीमित नहीं है। इसे भारत की "सुपर विज़न" क्षमता की शुरुआत माना जा रहा है, जो अंतरिक्ष से देश की सीमाओं, प्राकृतिक संसाधनों और रणनीतिक गतिविधियों पर अभूतपूर्व नजर रख सकेगी।

श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से सुबह 10:17 बजे होने वाला यह प्रक्षेपण तकनीकी सटीकता, वैज्ञानिक परिपक्वता और रणनीतिक सोच का अद्भुत संगम है। पीएसएलवी की विश्वसनीयता पहले ही दुनिया में स्थापित हो चुकी है और इस मिशन के जरिए वह एक बार फिर यह साबित करने जा रहा है कि भारत जटिल अंतरिक्ष अभियानों को कम लागत और उच्च सफलता दर के साथ अंजाम देने में सक्षम है। 'अन्वेषा' को जिस कक्षा में स्थापित किया जाएगा, वहां से यह लगभग 600 किलोमीटर की ऊंचाई से धरती की गतिविधियों पर पैनी नजर रखेगा। यह ऊंचाई ऐसी है, जहां से व्यापक क्षेत्र की निगरानी भी संभव है और उच्च गुणवत्ता वाली सूक्ष्म इमेजिंग भी।

EOS-N1 की सबसे बड़ी खासियत इसकी हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग क्षमता है। यह केवल सामान्य तस्वीरें लेने वाला सैटेलाइट नहीं है, बल्कि सैकड़ों वेवलेंथ में पृथ्वी की सतह को देखने और विश्लेषण करने में सक्षम है। इसका मतलब यह है कि यह सैटेलाइट जमीन पर मौजूद अलग-अलग वस्तुओं, संरचनाओं और गतिविधियों को उनकी भौतिक और रासायनिक विशेषताओं के आधार पर पहचान सकता है। यही क्षमता इसे सीमा निगरानी, सैन्य ठिकानों की गतिविधियों की पहचान, अवैध निर्माण, संदिग्ध मूवमेंट और यहां तक कि पर्यावरणीय बदलावों की निगरानी में बेहद प्रभावी बनाती है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा विकसित यह सैटेलाइट भारत की सामरिक जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जिससे इसकी उपयोगिता केवल नागरिक उद्देश्यों तक सीमित नहीं रहेगी।

'अन्वेषा' को अक्सर "आसमान में एक और आंख" कहा जा रहा है, लेकिन वास्तव में यह आंख पहले से कहीं ज्यादा तेज, संवेदनशील और बुद्धिमान है। आधुनिक युद्ध और सुरक्षा चुनौतियों में सूचना और समय सबसे अहम भूमिका निभाते हैं। जो देश पहले और सटीक जानकारी जुटा लेता है, वही रणनीतिक बढ़त हासिल करता है। इस सैटेलाइट के जरिए भारत को रियल-टाइम और हाई-रिज़ॉल्यूशन डेटा मिलेगा, जिससे किसी भी संभावित खतरे का आकलन समय रहते किया जा सकेगा। सीमा पार गतिविधियों, समुद्री क्षेत्रों में संदिग्ध हलचल और रणनीतिक क्षेत्रों में हो रहे बदलावों पर लगातार नजर रखना अब और ज्यादा प्रभावी हो जाएगा।

इस मिशन को और भी विशेष बनाती है इसकी बहु-उपग्रह संरचना। EOS-N1 के साथ कुल 15 सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेजे जाएंगे। इनमें 14 छोटे उपग्रह शामिल हैं, जिनमें से 8 विदेशी हैं। फ्रांस, नेपाल, ब्राजील और ब्रिटेन जैसे देशों के सैटेलाइट इस मिशन का हिस्सा होंगे। यह तथ्य भारत की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता को दर्शाता है। जब विभिन्न देश अपने उपग्रह भारत के रॉकेट से लॉन्च कराना चाहते हैं, तो यह केवल तकनीकी भरोसे का नहीं, बल्कि कूटनीतिक और व्यावसायिक विश्वास का भी संकेत है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

‘दीदी’ की हरी फाइल

ऐसा पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ही कर सकती हैं। उनका राजनीतिक जीवन अनेक ऐसे प्रसंगों से भरा रहा है, जिन्होंने उन्हें समर्थकों की नजर में जुझारू नेता और विरोधियों की दृष्टि में नियमों की अनदेखी करने वाली राजनेता के रूप में स्थापित किया है। स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत के इतिहास में शायद यह पहली बार हुआ है, जब प्रवर्तन निदेशालय जैसी केंद्रीय जांच एजेंसी किसी स्थान पर छापा मार रही हो और वहां की मुख्यमंत्री स्वयं पहुंचकर महत्वपूर्ण फाइलें, दस्तावेज और संभावित साक्ष्य अपने साथ ले जाती दिखाई दी हों। यह केवल राजनीतिक शिष्टाचार का उल्लंघन नहीं, बल्कि कानून के दायरे में आने वाला गंभीर अपराध भी माना जा सकता है। इससे भी अधिक गंभीर तथ्य यह है कि ममता बनर्जी कानून और उसके परिणामों से अनभिज्ञ नहीं हैं, इसके बावजूद उन्होंने ऐसा कदम उठाया।

पूरा मामला तब सामने आया, जब प्रवर्तन निदेशालय ने ‘इंडियन पॉलिटिकल एक्शन कमेटी’ यानी आई-पैक के सह-संस्थापक और वर्तमान प्रथम निदेशक प्रतीक जैन के घर और दफ्तर पर छापेमारी की। एक ही दिन में कोलकाता के छह और दिल्ली के चार ठिकानों पर कार्रवाई की गई। यह कार्रवाई 2020 के बहुचर्चित कोयला घोटाले और तस्करी से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों के संदर्भ में की गई थी। जैसे ही इस छापेमारी की सूचना मुख्यमंत्री ममता बनर्जी तक पहुंची, राज्य की राजनीति में हलचल मच गई। इसकी वजह केवल छापेमारी नहीं थी, बल्कि प्रतीक जैन का सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस से निकट संबंध और उनकी भूमिका थी। प्रतीक जैन न केवल आई-पैक के प्रमुख रणनीतिकार हैं, बल्कि तृणमूल कांग्रेस के आईटी प्रकोष्ठ के मुखिया भी माने जाते हैं और ममता बनर्जी के बेहद करीबी विश्वासपात्र हैं।

आई-पैक की स्थापना भले ही चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने की हो, लेकिन अब उन्होंने सक्रिय राजनीति में कदम रखकर बिहार से अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू कर दी है। उनके उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतर चुके हैं और वे आई-पैक की प्रत्यक्ष गतिविधियों से अलग हो चुके हैं। वर्तमान में आई-पैक की कमान प्रतीक जैन के हाथों में है। ऐसे में ईडी की यह कार्रवाई तृणमूल कांग्रेस के लिए केवल कानूनी चुनौती नहीं, बल्कि चुनावी दृष्टि से भी असहज स्थिति पैदा करने वाली थी। शायद यही कारण रहा कि छापेमारी की सूचना मिलते ही ममता बनर्जी स्वयं राज्य के पुलिस महानिदेशक राजीव कुमार के साथ पहले प्रतीक जैन के घर पहुंचीं और फिर दोपहर में तीन घंटे तक आई-पैक के दफ्तर में मौजूद रहीं। जब मुख्यमंत्री दफ्तर से बाहर आईं और मीडिया के सामने आईं, तो एक दृश्य ने पूरे घटनाक्रम को और विवादास्पद बना दिया। उनके हाथ में हरे रंग की एक फाइल थी, जिसे वह अपने सीने से मजबूती से लगाए हुए थीं। यह दृश्य प्रतीकात्मक भी था और कई सवाल खड़े करने वाला भी। मुख्यमंत्री ने मीडिया से बातचीत में केंद्र सरकार पर, विशेषकर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर, चुनाव से पहले केंद्रीय जांच एजेंसियों के दुरुपयोग का आरोप लगाया। उन्होंने तीखे शब्दों में कहा कि यह छापेमारी उनकी पार्टी की चुनावी रणनीति को चुराने और विपक्ष को लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से कराई गई है। ममता बनर्जी इससे पहले भी केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह को ‘दुर्योधन’ और ‘दुशासन’ जैसे विशेषणों से नवाज चुकी हैं। इस बार भी उनके आरोपों की धार केंद्र सरकार पर ही केंद्रित रही। उनका बुनियादी तर्क यह था कि तृणमूल कांग्रेस की चुनावी रणनीति, उम्मीदवारों की सूची और बूथ स्तर की तैयारियों को जानने के लिए ईडी का इस्तेमाल किया जा रहा है। हालांकि यह तर्क अपने आप में कई सवालों को जन्म देता है। आखिर ईडी किसी राजनीतिक दल की चुनावी रणनीति जानने के लिए छापेमारी क्यों करेगा? यह न तो उसका संवैधानिक दायित्व है और न ही उसके कार्यक्षेत्र में आता है। ईडी का गठन मनी लॉन्ड्रिंग, आर्थिक अपराध, हवाला और काले धन से जुड़े मामलों की जांच के लिए किया गया है, न कि राजनीतिक दलों की रणनीति पर नजर रखने के लिए। वास्तविकता यह है कि राजनीति से जुड़े मामलों में ईडी की दखलअंदाजी का प्रतिशत बेहद कम है। कुल मामलों में केवल दो से तीन प्रतिशत ही ऐसे होते हैं, जिनमें राजनीति से जुड़े लोग आरोपी होते हैं और जिनमें ईडी आरोप-पत्र दाखिल करता है। यदि सजा की दर कम है, तो उसकी जिम्मेदारी जांच एजेंसी पर नहीं, बल्कि न्यायपालिका पर होती है, क्योंकि दोष सिद्ध करना और सजा तय करना अदालतों का कार्य है। ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक है कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के हाथ में जो हरी फाइल थी, उसमें ऐसा क्या था, जिसे वह स्वयं, मुख्यमंत्री होने के बावजूद, जांच एजेंसी की मौजूदगी में अपने साथ ले गईं।

पाकिस्तान के रास्ते जाता बांग्लादेश, इस्लामिक कट्टरपंथ और भारत के प्रति घृणा हावी

“बांग्लादेश के हालात बिगड़ने के साथ यह भी दिख रहा है कि वहां की अंतरिम सरकार भारत से संबंध सुधारने के बजाय बिगाड़ने पर अमादा है। उसे न तो अपने यहां के हिंदुओं की हत्याओं की कोई परवाह है और न ही भारत विरोधी तत्वों के बेलगाम होते जाने की। वह इन तत्वों पर लगाम लगाने के बजाय उन्हें शह ही अधिक दे रही है।

बांग्लादेश के हालात बिगड़ने के साथ यह भी दिख रहा है कि वहां की अंतरिम सरकार भारत से संबंध सुधारने के बजाय बिगाड़ने पर अमादा है। उसे न तो अपने यहां के हिंदुओं की हत्याओं की कोई परवाह है और न ही भारत विरोधी तत्वों के बेलगाम होते जाने की। वह इन तत्वों पर लगाम लगाने के बजाय उन्हें शह ही अधिक दे रही है। अपने यहां भारत विरोधी माहौल बनाने के लिए बांग्लादेश एक ओर जहां अपनी क्रिकेट टीम को भारत में आयोजित होने वाले टी-20 विश्व कप में भेजने में आनाकानी कर रहा है, वहीं पाकिस्तान से अपने संबंध प्रगाढ़ कर रहा है।

बांग्लादेश में जो हालात हैं, वे हमारी भूलों की भी देन हैं। ऐसी ही भूल हमने कश्मीर को हड़पने की कोशिश करने वाले पाकिस्तान के मामले में भी की थी। कश्मीर को महज एक राजनीतिक समस्या मानकर हम वहां राजनीतिक समाधान तलाशते रहे। इसके परिणाम क्या रहे, उससे सभी परिचित हैं। हमने कोई सबक नहीं सीखा और 1971 में पूर्वी पाकिस्तान के बांग्लाभाषी मुसलमानों और हिंदू अल्पसंख्यकों का पाकिस्तानी फौज द्वारा किए जा रहे नरसंहार को रोकने और बांग्लादेश को मुक्त कराने के लिए भारत ने पाकिस्तानी सेना से युद्ध लड़ा।

जिस समय भारत बांग्लादेश के मुक्ति युद्ध में कूदा, उस समय तक पाकिस्तान की फौज 25 लाख बांग्लाभाषी मुसलमानों और हिंदुओं का नरसंहार कर चुकी थी और लाखों महिलाओं के साथ दुष्कर्म हो चुका था। पाकिस्तान की फौज बंगाली मुसलमानों की नस्ल बदलने के लिए रेप कैंप संचालित कर रही थी। इन कैंपों में जन्मे हजारों बच्चों के पुनर्वास के लिए बाद में बांग्लादेश की सरकार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दत्तक ग्रहण कार्यक्रम चलाना पड़ा।

लगभग 4000 भारतीय सैनिकों के बलिदान के बाद ये पाशविक अत्याचार बंद हुए और बांग्लादेश का निर्माण हुआ, परंतु हमने न तो इन अत्याचारों के अपराधी एक भी पाकिस्तानी सैनिक या सैन्य अधिकारियों को सजा दी और न ही इन जनसंहारों और अत्याचारों में पाकिस्तानी फौज का साथ देने वाले स्थानीय जमाती रजाकारों को ही मिटा डालने के लिए कुछ किया। भारत ने सोचा कि बांग्लादेश के मुसलमान पाकिस्तानी फौज और जमातियों के इन भयावह अत्याचारों को झेलने के बाद अब कभी भी इस्लामिक कट्टरपंथ के रास्ते नहीं चलेंगे और न ही पाकिस्तान से हाथ मिलाने की कभी सोचेंगे।

इसी गलत आकलन के आधार पर बंगाली मुसलमानों के लिए तो भारत ने पूरा नया देश बनाकर दे दिया, परंतु वहां रह रहे हिंदुओं और बौद्धों को एक बार फिर से वहां के मुस्लिम समाज के भरोसे छोड़ दिया।

भारत में नीति-निर्माता भूल गए कि 1946 में बंगाली मुसलमानों ने मुस्लिम लीग का साथ देते हुए जिन्ना के डायरेक्ट एक्शन में सबसे अग्रणी भूमिका निभाई थी और नोआखाली में हिंदुओं के नरसंहार को अंजाम दिया था। बांग्लादेश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले अधिकतर नेता और सैन्य अधिकारी मुस्लिम लीग और पाकिस्तानी फौज में रह चुके थे। भारत ने पाकिस्तान से अलग होकर बने नए देश बांग्लादेश के नेताओं और सेना पर इतना भरोसा किया कि चटगांव हिल ट्रैक्ट्स जैसे सामरिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों को भी बांग्लादेश के कब्जे में ही छोड़ दिया, जबकि 1947 के बंटवारे में चटगांव हिल ट्रैक्ट्स भारत के हिस्से में आने चाहिए थे, क्योंकि भारत-पाकिस्तान बंटवारे के अंतर्गत बंगाल का बंटवारा हुआ था और चटगांव हिल ट्रैक्ट्स उस समय बंगाल का भाग नहीं था। न ही वह मुस्लिम बहुल था, जो पाकिस्तान को दिया जाता।

यही कारण था कि वहां की जनता को लगा था कि उनका भारत का भाग बनना निश्चित है और 15 अगस्त, 1947 को वहां तिरंगा लहराया भी गया था, परंतु बंगाल बाउंड्री कमीशन ने अप्रत्याशित रूप में 17 अगस्त, 1947 को चटगांव हिल ट्रैक्ट्स को पाकिस्तान को दे दिया और पाकिस्तान की फौज ने वहां से तिरंगा उतारा।

1971 की जीत के बाद भारत चटगांव हिल ट्रैक्ट्स वापस ले सकता था, परंतु ऐसा नहीं किया गया, क्योंकि हम यह दिखाना चाहते थे कि हमने तो सिर्फ मानवता के आधार पर बांग्लादेश की सहायता की है, जबकि चटगांव और त्रिपुरा के बीच में मात्र 28 किमी लंबी पट्टी है, जिस पर भारत का अधिकार होने पर भारत के उत्तर पूर्व को समुद्री तट प्राप्त हो सकता था और वहां का आर्थिक विकास हो सकता था। इसके अलावा चीन और अमेरिका को बंगाल की खाड़ी में पैर जमाने से रोका जा सकता था और लाखों बौद्धों एवं हिंदुओं की रक्षा हो सकती थी।

आज बांग्लादेश में जो हालात हैं, उससे यह स्पष्ट है कि इस्लामिक कट्टरपंथ और भारत के प्रति घृणा वहां के समाज पर अब उसी तरह हावी है, जैसे पाकिस्तान पर हावी है। वह भारत के एहसान और बलिदान, दोनों को ही भूल चुका है। इसलिए भारत में नीति-निर्माताओं को आज के बांग्लादेश संकट को पूर्व में शेख मुजीब और जियाउर रहमान की हत्याओं से उपजे राजनीतिक संकटों की तरह समझना बंद कर देना चाहिए। वे हिंसा के बावजूद अंततोगत्वा राजनीतिक संकट थे, परंतु इस बार ऐसा नहीं है। बांग्लादेश के समाज का बड़े पैमाने पर जिहादीकरण हुआ है और यदि हमने इस तथ्य की अनदेखी कर उसे राजनीतिक समस्या समझकर उससे निपटने की कोशिश की तो हम वैसे ही पछताएंगे, जैसे कश्मीर के मामले में पछताते आए हैं।

हम बांग्लादेश में चाहे जिस पार्टी का समर्थन करें, वहां के गली-मोहल्लों में कट्टरपंथी जमाती हावी रहने वाले हैं और चाहे किसी भी पार्टी की सरकार वहां आए, वह उनके सामने मजबूर रहने वाली है। इसके चलते भविष्य में बांग्लादेश के हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के समक्ष खतरा बढ़ जाए तो हैरानी नहीं। इस खतरे को देखते हुए हमें वहां अपनी सीमा के निकट और अपनी पहुंच के अंदर के हिंदू और बौद्ध परिक्षेत्रों में अपनी स्थिति मजबूत करने पर ध्यान देना चाहिए। हमें इजरायल से सीखना चाहिए, जो हर सैन्य जीत या संकट के बाद अपने भूभाग का विस्तार करता है, ताकि वह यहूदियों के लिए नए परिक्षेत्र बसा सके और अपने सामरिक प्रभाव क्षेत्र का विस्तार कर सके।

प्रेरणा

नई फसल, नई उम्मीदें और परंपराओं का पर्वः लोहड़ी

लोहड़ी केवल एक पर्व नहीं, बल्कि उत्तर भारतीय लोकजीवन की वह जीवंत अभिव्यक्ति है, जिसमें प्रकृति, इतिहास, लोकआस्था और सामाजिक संवेदना एक साथ सांस लेती दिखाई देती है। यह उत्सव सर्दी की कठोरता के बीच जीवन के उत्साह, ऊर्जा और सामूहिक उल्लास का प्रतीक बनकर सामने आता है। जब ठंड अपने चरम पर होती है, कोहरा चारों ओर छाया रहता है और प्रकृति मानो स्थिर-सी हो जाती है, तब लोहड़ी की अग्नि केवल शरीर को गर्मी नहीं देती, बल्कि मन और समाज को भी जीवंत कर देती है। इसी कारण लोहड़ी को ऋतु परिवर्तन का पर्व तो माना ही जाता है, साथ ही यह मानवीय रिश्तों, लोकस्मृतियों और सांस्कृतिक निरंतरता का उत्सव भी बन जाती है।

लोहड़ी से जुड़ी मान्यताओं में प्राचीन पौराणिक स्मृतियां भी समाहित हैं। लोकविश्वास के अनुसार लोहड़ी की अग्नि का संबंध दक्ष प्रजापति की पुत्री सती के योगाग्नि-दहन से जोड़ा जाता है। यह अग्नि आत्मशुद्धि, त्याग और नकारात्मकता के दहन का प्रतीक मानी जाती है। समय के साथ इस पौराणिक विश्वास में लोकजीवन की कथाएं भी जुड़ती चली गईं और लोहड़ी का स्वरूप और अधिक व्यापक होता गया। इसी क्रम में पंजाब के लोकनायक दुल्ला भट्टी की गाथा लोहड़ी का अभिन्न हिस्सा बन गई। दुल्ला भट्टी मुगल काल में अन्याय और शोषण के विरुद्ध खड़े होने वाले उस लोकनायक का नाम है, जिसने सत्ता के भय से परे जाकर मानवीय मूल्यों की रक्षा की। संदल बार क्षेत्र में निर्धन परिवारों की लड़कियों को गुलामी के लिए बेचे जाने की कुप्रथा के विरुद्ध उसने विद्रोह किया, उन्हें मुक्त कराया और उनकी शादियां करवा कर सामाजिक सुरक्षा भी दी। यही कारण है कि दुल्ला भट्टी केवल इतिहास का पात्र नहीं, बल्कि लोकमानस में न्याय, साहस और करुणा का प्रतीक बन गया।

लोहड़ी के गीतों में दुल्ला भट्टी का नाम आज भी उसी श्रद्धा और गर्व के साथ लिया जाता है। बच्चे जब “सुंदर मुंदरिये हो, तेरा कौन बेचारा हो” गाते हैं, तो वह केवल एक लोकगीत नहीं रहता, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही सामाजिक चेतना का उद्घोष बन जाता है। यह परंपरा बताती है कि लोकपर्व केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे समाज के नैतिक मूल्यों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य भी करते हैं। लोहड़ी इसी कारण लोकसंस्कृति की जीवित पाठशाला बन जाती है।

लोहड़ी पौष मास की अंतिम रात को मनाई जाती है और इसके अगले दिन माघ मास का शुभारंभ होता है। माघी का दिन हिंदू परंपरा में अत्यंत पवित्र माना गया है। इस दिन नदी में स्नान, दान और पुण्य कर्म का विशेष महत्व है। गन्ने के रस से बनी खीर और अन्य मिष्ठानों का प्रयोग केवल स्वाद का विषय नहीं, बल्कि प्रकृति की उदारता के प्रति कृतज्ञता का भाव भी दर्शाता है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि जब प्रकृति हमें अन्न, गन्ना और ऊर्जा प्रदान करती है, तो उसका सम्मान और साझा उपयोग भी उतना ही आवश्यक है।

सर्दी के इस समय तापमान कई स्थानों पर शून्य के आसपास पहुंच जाता है। घने कोहरे के बीच जीवन मानो ठिठुर जाता है, लेकिन लोहड़ी के अलाव उस ठिठुरन को चुनौती देते हैं। पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में लोग लोहड़ी के लिए लकड़ियां एकत्र करते हैं और बड़े-बड़े अलाव सजाते हैं। इन अलावों के चारों ओर इकट्ठा होकर लोग नाचते-गाते हैं, हंसी-मजाक करते हैं और अपने मन का बोझ हल्का करते हैं। यह दृश्य केवल उत्सव का नहीं, बल्कि सामूहिक जीवन का प्रतीक होता है, जहां व्यक्ति अकेला नहीं, बल्कि समुदाय का हिस्सा बनकर खड़ा होता है।

लोकविश्वास है कि पुराने समय में लोग पौष मास की अंतिम रात अग्नि के सामने बैठकर सूर्यदेव से प्रार्थना करते थे कि वे अपनी किरणों से पृथ्वी को पर्याप्त गर्मी प्रदान करें, ताकि कठोर ठंड से जीवन की रक्षा हो सके। यह परंपरा दर्शाती है कि हमारे पूर्वज प्रकृति को शत्रु नहीं, बल्कि संवाद का सहभागी मानते थे। मौसम, सूर्य और अग्नि—सबके साथ एक आत्मीय रिश्ता स्थापित किया गया था। यही रिश्ता लोहड़ी को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय चेतना से भी जोड़ देता है।

हिंदू पंचांग के अनुसार लोहड़ी मकर संक्रांति से एक दिन पहले मनाई जाती है। यह वह समय है, जब सूर्य उत्तरायण की ओर अग्रसर होता है और शीत ऋतु के प्रकोप में धीरे-धीरे कमी आने लगती है। पौष मास समाप्त होकर माघ मास का आरंभ होता है, जिसे शास्त्रों में शुभ और कल्याणकारी माना गया है। उत्तरायण काल का उल्लेख श्रीमद्भगवद्गीता सहित अनेक ग्रंथों में मिलता है। इस अवसर पर गंगा स्नान और गंगासागर जैसे तीर्थों पर श्रद्धालुओं की भीड़ यह प्रमाणित करती है कि ऋतु परिवर्तन केवल प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना से भी जुड़ा हुआ है।

पंजाब में लोहड़ी का उत्साह विशेष रूप से देखने को मिलता है। पंजाबी समाज अपनी हंसी-मजाक, ऊर्जा और उत्सवप्रिय स्वभाव के लिए जाना जाता है। लोहड़ी इस स्वभाव को और अधिक उजागर कर देती है। इस दिन लोग अपनी व्यस्त दिनचर्या से बाहर निकलते हैं, रिश्तेदारों और पड़ोसियों से मिलते हैं और सामूहिक रूप से आनंद मनाते हैं। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में यह पर्व सामाजिक जुड़ाव का अवसर बन जाता है, जहां लोग एक-दूसरे के सुख-दुख को समझते और साझा करते हैं।

लोहड़ी का स्वरूप केवल पंजाब तक सीमित नहीं है। भारत के अन्य भागों में यही भावना मकर संक्रांति और पोंगल जैसे पर्वों में दिखाई देती है। नाम, रीति और परंपराएं अलग हो सकती हैं, लेकिन मूल संदेश एक ही है—प्रकृति के प्रति आभार, परिश्रम का सम्मान और सामूहिक आनंद। यही एकता भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी शक्ति है, जो विविधता के बीच भी एक साझा चेतना बनाए रखती है।

विश्व में हिन्दी की बढ़ती साखः भारत में उपेक्षा क्यों?

हर वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाने वाला विश्व हिंदी दिवस केवल एक औपचारिक या प्रतीकात्मक आयोजन नहीं है, बल्कि यह हिंदी भाषा की वैश्विक यात्रा, उसकी बढ़ती प्रतिष्ठा, उसके सामने उपस्थित चुनौतियों और हमारे अपने राष्ट्रीय आचरण की विडंबनाओं पर गहन चिंतन का अवसर है। यह दिन हमें उस ऐतिहासिक क्षण की स्मृति कराता है जब पहली बार संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी बोली गई थी और भारत की सांस्कृतिक आत्मा ने विश्व मंच पर अपनी मौलिक पहचान दर्ज कराई थी। आज स्थिति यह है कि हिंदी विश्व में सम्मान, स्वीकार्यता और लोकप्रियता की नई ऊँचाइयों को छू रही है, लेकिन अपने ही देश में वह अपेक्षा, उपेक्षा और संकोच के बीच झूलती दिखाई देती है। यही विरोधाभास विश्व हिंदी दिवस को और अधिक प्रासंगिक बना देता है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य दुनियाभर में फैले हिंदी जानकारों, हिन्दीभाषियों को एकजुट करना, हिन्दी को विश्व स्तर पर स्थापित एवं प्रोत्साहित करना और हिंदी की आवश्यकता से अवगत कराना है। अंग्रेजी भाषा भले ही दुनियाभर के कई देशों में बोली है और लिखी जाती है लेकिन हिंदी हृदय की भाषा है। विश्व हिन्दी दिवस विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करने तथा हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दिलाने का प्रभावी उपक्रम है।हिंदी मात्र संवाद की भाषा नहीं है, वह भारतीय सभ्यता, संस्कृति, संवेदना और सामूहिक चेतना की वाहक है। यह लोक से उपजी, लोक में पली और लोक के लिए ही जीने वाली भाषा है। हिंदी का सबसे बड़ा गुण उसकी सहजता, सरलता और वैज्ञानिक संरचना है। यह ध्वन्यात्मक भाषा है, जिसमें जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला जाता है, जिससे इसे सीखना और अपनाना अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। यही कारण है कि जिन देशों में भारतीय प्रवासी बसे हैं, वहां हिंदी ने सहज ही अपनी जड़ें जमा ली हैं। एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका तक हिंदी आज केवल भारतीयों की भाषा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद की भाषा बनती जा रही है। योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, बॉलीवुड, भक्ति साहित्य और डिजिटल माध्यमों ने हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह दुनिया की तीसरी या चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, अंग्रेजी और मंदारिन चीनी के बाद, और भारत के साथ-साथ नेपाल, मॉरीशस, फिजी जैसे देशों में भी इसका व्यापक उपयोग है और यह विश्व स्तर पर लोकप्रिय हो रही है।

विश्व में लगभग साठ-सत्तर करोड़ से अधिक लोग हिंदी बोलते, समझते या किसी न किसी रूप में उससे जुड़े हैं। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी की उपस्थिति निरंतर बढ़ रही है। विश्व हिंदी सम्मेलन, जिसकी शुरुआत 1975 में नागपुर में हुई थी, आज एक वैश्विक वैचारिक आंदोलन का रूप ले चुका है। इन सम्मेलनों ने यह सिद्ध किया है कि हिंदी केवल भावनाओं या साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि विचार, विज्ञान, कूटनीति और वैश्विक संवाद की भी सक्षम भाषा है। हिंदी को वैश्विक मंच पर आत्मसम्मान और स्वाभिमान के साथ प्रस्तुत करने का श्रेय यदि किसी भारतीय नेता को जाता है, तो वे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी हैं। 1977 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिया गया उनका भाषण केवल भाषण नहीं था, बल्कि वह एक सांस्कृतिक उद्घोषणा थी। अटल बिहारी वाजपेयी ने यह सिद्ध कर दिया कि हिंदी में भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति, शांति, निरस्त्रीकरण और मानवता जैसे गहन विषयों पर प्रभावी संवाद संभव है। उनके लिए हिंदी भावुक आग्रह नहीं, बल्कि राष्ट्रबोध की सशक्त अभिव्यक्ति थी। उन्होंने हिंदी को सत्ता की भाषा बनाने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उसे संवाद और आत्मगौरव की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में हिंदी की यात्रा कुछ हद तक धीमी अवश्य हुई, विशेष रूप से शासन और उच्च प्रशासनिक स्तर पर। अंग्रेज़ी को आधुनिकता, सफलता और वैश्विकता का प्रतीक मान लिया गया, जबकि हिंदी को प्रायः भावनात्मक या घरेलू दायरे में सीमित कर दिया गया। शिक्षा, न्यायपालिका, कॉर्पोरेट जगत और उच्च प्रशासन में हिंदी अपेक्षित स्थान नहीं बना सकी। हालांकि हिंदी साहित्य, पत्रकारिता और सिनेमा ने इस दौर में भी अपनी सृजनात्मक ऊर्जा बनाए रखी, लेकिन नीतिगत स्तर पर हिंदी को वह प्राथमिकता नहीं मिल पाई जिसकी वह हकदार थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में हिंदी ने एक बार फिर वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास के साथ उपस्थिति दर्ज कराई है। वे विश्व के किसी भी मंच पर हिंदी में बोलने से संकोच नहीं करते। संयुक्त राष्ट्र महासभा, जी-20 सम्मेलन, शंघाई सहयोग संगठन या प्रवासी भारतीयों के कार्यक्रम, हर जगह उनकी हिंदी यह संदेश देती है कि अपनी भाषा में बोलना कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मबल का परिचायक है। नरेंद्र मोदी ने हिंदी को अनुवाद की बैसाखी के सहारे नहीं, बल्कि उसकी मौलिक शक्ति के साथ प्रस्तुत किया। डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया जैसे अभियानों में हिंदी को केंद्र में रखा गया, जिससे आम नागरिक का शासन से संवाद अधिक सुलभ और प्रभावी हुआ। सरकारी योजनाओं, मोबाइल ऐप्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी की बढ़ती उपस्थिति ने यह सिद्ध किया कि तकनीक और हिंदी एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं। इसके बावजूद यह एक कटु सत्य है कि हिंदी आज विश्व में जितनी प्रतिष्ठित हो रही है, उतनी ही अपने ही देश में उपेक्षित होती जा रही है। अंग्रेज़ी को सामाजिक प्रतिष्ठा और बौद्धिक श्रेष्ठता का पैमाना बना दिया गया है। माता-पिता अपने बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम में पढ़ाकर गर्व महसूस करते हैं, जबकि हिंदी माध्यम को हीन दृष्टि से देखा जाता है।

अभियान

तिल की तपस्या और विष्णु कृपा का पर्वः षटतिला एकादशी का आध्यात्मिक संदेश

सनातन परंपरा में एकादशी व्रतों का विशेष स्थान है और इनमें भी षटतिला एकादशी का महत्व अत्यंत विशिष्ट माना गया है। माघ मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली यह एकादशी केवल एक तिथि नहीं, बल्कि शुद्धि, दान, संयम और भक्ति का समन्वित पर्व है। इस दिन भगवान विष्णु की आराधना कर मनुष्य न केवल अपने पापों से मुक्ति पाता है, बल्कि जीवन में सुख, समृद्धि और शांति का भी अनुभव करता है। शास्त्रों में कहा गया है कि माघ मास स्वयं में पुण्यदायी होता है और जब इसमें षटतिला एकादशी आती है, तब इसका प्रभाव और अधिक बढ़ जाता है। यह पर्व मनुष्य को यह स्मरण कराता है कि भक्ति के साथ-साथ दान और करुणा भी जीवन के अनिवार्य अंग हैं।

षटतिला एकादशी का नाम ही इसके स्वरूप को स्पष्ट कर देता है। ‘षट’ का अर्थ है छह और ‘तिला’ का अर्थ है तिल। इस एकादशी पर तिल का छह प्रकार से प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे षटतिला एकादशी कहा गया है। तिल स्नान, तिल का उबटन, तिलोदक अर्थात जल में तिल मिलाकर स्नान, तिल का हवन, तिल मिश्रित भोजन और तिल का दान—ये छहों कर्म इस व्रत की आत्मा हैं। तिल को शास्त्रों में अत्यंत पवित्र माना गया है। यह केवल एक अन्न नहीं, बल्कि पापों को नष्ट करने वाला और पुण्य प्रदान करने वाला द्रव्य माना गया है। कहा जाता है कि तिल में भगवान विष्णु का वास होता है, इसलिए तिल से जुड़े कर्म सीधे विष्णु कृपा से जुड़ जाते हैं।

इस एकादशी के दिन प्रातःकाल तिल मिश्रित जल से स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। ऐसा माना जाता है कि इससे शरीर की बाहरी और भीतरी अशुद्धियां दूर होती हैं। तिल के तेल से शरीर की मालिश कर स्नान करने से न केवल स्वास्थ्य लाभ होता है, बल्कि यह कर्म शीत ऋतु में शरीर को ऊर्जा और शक्ति भी प्रदान करता है। इसके पश्चात स्वच्छ वस्त्र धारण कर भगवान विष्णु का ध्यान किया जाता है। पंचामृत में तिल मिलाकर भगवान का अभिषेक करना अत्यंत पुण्यदायी माना गया है। यह अभिषेक भक्ति के साथ किया जाए, तो साधक के जीवन में चल रही अनेक बाधाएं दूर हो जाती हैं।

षटतिला एकादशी का मूल संदेश केवल व्रत और पूजा तक सीमित नहीं है। यह पर्व दान के महत्व को विशेष रूप से रेखांकित करता है। शास्त्रों में स्पष्ट कहा गया है कि बिना दान के कोई भी धार्मिक कर्म पूर्ण नहीं माना जाता। इस दिन तिल और अन्न का दान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि मनुष्य जितने तिल दान करता है, उतने ही सहस्त्र वर्षों तक वह स्वर्ग में निवास करता है। यह कथन प्रतीकात्मक भी है और आध्यात्मिक भी। इसका तात्पर्य यह है कि दान से मनुष्य का अहंकार नष्ट होता है और उसकी चेतना उच्च स्तर की ओर अग्रसर होती है।

षटतिला एकादशी के व्रत से शारीरिक शुद्धि और मानसिक शांति दोनों प्राप्त होती हैं। उपवास और संयम से शरीर की विकृतियां दूर होती हैं, जबकि दान और सेवा से मन का भार हल्का होता है। माघ मास की ठंड में तिल, गुड़ और अन्न का दान करना समाज के कमजोर वर्गों के लिए सहारा बनता है। इस प्रकार यह व्रत केवल व्यक्तिगत साधना नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का भी बोध कराता है। सनातन धर्म का यही सौंदर्य है कि वह व्यक्ति और समाज दोनों के कल्याण की बात करता है।

षटतिला एकादशी से जुड़ी कथा इस पर्व के महत्व को और अधिक गहराई प्रदान करती है। एक बार नारद मुनि भगवान विष्णु के धाम वैकुंठ पहुंचे और उन्होंने षटतिला एकादशी के महत्व के बारे में जानने की इच्छा प्रकट की। तब भगवान विष्णु ने उन्हें एक प्राचीन कथा सुनाई। उन्होंने बताया कि पृथ्वी पर एक ब्राह्मण की पत्नी रहती थी, जो अत्यंत श्रद्धालु और विष्णु भक्त थी। उसके पति का देहांत हो चुका था और वह एकांत में रहकर भगवान की आराधना करती थी। उसने एक महीने तक कठोर व्रत रखकर भगवान विष्णु की उपासना की, जिससे उसका शरीर और मन शुद्ध हो गया, लेकिन एक दोष उसमें रह गया। वह ब्राह्मणों और देवताओं के लिए अन्न दान नहीं करती थी।

भगवान विष्णु ने सोचा कि यह स्त्री भले ही भक्ति में लीन है, पर दान के अभाव में इसे पूर्ण संतोष नहीं मिल पाएगा। इसलिए वे स्वयं एक दिन भिक्षुक के रूप में उसके पास पहुंचे और भिक्षा मांगी। उस स्त्री ने भिक्षा के रूप में भगवान को अन्न देने के बजाय मिट्टी का एक पिंड उनके हाथ में रख दिया। भगवान वह पिंड लेकर वैकुंठ लौट आए। कुछ समय बाद जब वह स्त्री देह त्यागकर वैकुंठ पहुंची, तो उसे वहां एक खाली कुटिया और एक आम का पेड़ मिला। कुटिया में अन्न और धन का अभाव देखकर वह विचलित हो गई और भगवान विष्णु के पास जाकर कारण पूछने लगी।

भगवान विष्णु ने उसे बताया कि यह स्थिति उसके द्वारा अन्न दान न करने और भिक्षा में मिट्टी देने के कारण उत्पन्न हुई है। इसके पश्चात भगवान ने उस स्त्री को उपाय बताया कि जब देवकन्याएं उससे मिलने आएं, तब वह उनसे षटतिला एकादशी के व्रत की विधि पूछे। स्त्री ने वैसा ही किया और देवकन्याओं द्वारा बताए गए विधान से षटतिला एकादशी का व्रत किया, तिल और अन्न का दान किया। व्रत के प्रभाव से उसकी कुटिया अन्न और धन से भर गई और उसे वैकुंठ में पूर्ण सुख प्राप्त हुआ। इस कथा के माध्यम से भगवान विष्णु ने नारद मुनि को यह सत्य समझाया कि भक्ति के साथ दान अनिवार्य है।

षटतिला एकादशी यह सिखाती है कि केवल उपवास और पूजा से ही नहीं, बल्कि सेवा और दान से भी ईश्वर प्रसन्न होते हैं। यह व्रत मनुष्य को उसके कर्मों की जिम्मेदारी का बोध कराता है। जो व्यक्ति जैसा दान करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। यह सिद्धांत केवल परलोक तक सीमित नहीं, बल्कि इसी जीवन में भी अनुभव किया जा सकता है। दान से समाज में संतुलन बनता है और मनुष्य के भीतर करुणा का भाव विकसित होता है।

आज के भौतिक युग में षटतिला एकादशी का संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। जहां एक ओर लोग भक्ति को केवल कर्मकांड तक सीमित कर लेते हैं, वहीं यह पर्व याद दिलाता है कि सच्ची भक्ति वही है, जिसमें दूसरों के लिए संवेदना और सहयोग हो। तिल जैसा छोटा-सा बीज भी जब श्रद्धा से दान किया जाता है, तो वह सहस्त्र गुना फल देता है। यही इस एकादशी की आध्यात्मिक शक्ति है। इस प्रकार षटतिला एकादशी भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करने का सरल और प्रभावी मार्ग है। यह पर्व शुद्ध आहार, संयमित जीवन, उदार दान और निष्कलंक भक्ति का संदेश देता है। जो व्यक्ति श्रद्धा और विधिपूर्वक इस एकादशी का व्रत करता है, उसके जीवन से दरिद्रता, पाप और अशांति दूर होती है और उसे अंततः मोक्ष तथा वैभव की प्राप्ति होती है। यही षटतिला एकादशी का परम सत्य और सनातन संदेश है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस में उद्योगपतियों के प्रतिभाव

रिलायंस इंडस्ट्रीज आगामी पाँच वर्ष में गुजरात में 7 लाख करोड़ रुपए का निवेश करेगी : मुकेश अंबाणी

ग्रीन एनर्जी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा खेल-कूद क्षेत्र में बड़े उद्यमों द्वारा गुजरात को विश्व पटल पर ले जाने की मंशा

(जीएनएस)। गांधीनगर : वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस – कच्छ एवं सौराष्ट्र में रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबाणी ने गुजरात के लिए पाँच बड़ी एवं महत्वपर्ण घोषणाएँ की हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में अंबाणी ने कहा कि रिलायंस गुजरात की पहचान है और गुजरात रिलायंस का हृदय है। इस अवसर पर उन्होंने राज्य के विकास के लिए रिलायंस की कटिबद्धता को संकल्प के रूप में घोषित किया।

रिलायंस अब तक गुजरात में सबसे बड़ा निवेशक रहा है। पिछले पाँच वर्ष में कंपनी ने 3.5 लाख करोड़ रुपए का निवेश किया है, जिसे आगामी पाँच वर्ष में दुगुना कर 7 लाख करोड़ रुपए किया जाएगा, जिससे रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

(1) जामनगर में विश्व का सबसे बड़ा एकीकृत ग्रीन एनर्जी इकोसिस्टम बनाया गया जा रहा है, जिसमें सोलर, ग्रीन हाइड्रोजन तथा सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल जैसे उद्योगों का समावेश होगा। जामनगर अब हाइड्रोकार्बन के स्थान पर ग्रीन एनर्जी का बड़ा निर्यातक बनेगा।

(2) कच्छ में मल्टी-गीगावाट क्षमता वाला सोलर प्रोजेक्ट स्थापित किया जाएगा, जो भारत की ऊर्जा सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

(3) जामनगर में भारत का सबसे बड़ा एआई-रेडी डेटा सेंटर स्थापित किया जाएगा। जियो द्वारा एक विशेष इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म लॉन्च किया जाएगा, जिसका प्रारंभ गुजरात से होगा। इससे आम नागरिक अपनी भाषा में एआई सेवा का उपयोग कर सकेगा।

(4) प्रधानमंत्री के 2036 में अहमदाबाद में ओलंपिक लाने के विजन को समर्थन देने के लिए रिलायंस फाउंडेशन गुजरात सरकार के साथ जुड़ेगा। नारणपुरा स्थित वीर सावरकर मल्टी-स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का संचालन रिलायंस संभालेगा।

(5) सौराष्ट्र के जामनगर में विश्व स्तरीय अस्पताल की स्थापना की जाएगी और शिक्षा क्षेत्र में सुविधाओं का दायरा बढ़ाया जाएगा।

मुकेश अंबाणी ने कहा कि भारत आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विश्व की एक बड़ी शक्ति बन रहा है और यह भारत का निर्णायक दशक है।

कच्छ के मुंद्रा में आगामी पाँच वर्ष में अदाणी ग्रुप 1.50 लाख करोड़ रुपए का पूंजी निवेश करेगा : करण अदाणी

अदाणी पोर्ट तथा स्पेशल इकोनॉमिक जोन के एमडी श्री करण अदाणी ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में भारत निरंतर आगे बढ़ रहा है। उनके मार्गदर्शन में कच्छ सबसे बड़ा एनर्जी हब बना है। अदाणी ग्रुप के लिए मुंद्रा कर्मभूमि है तथा सोलर मैन्युफेक्चरिंग के लिए मुंद्रा महत्वपूर्ण सेंटर बना है। अदाणी ग्रुप विश्व का सबसे बड़ा एनर्जी पार्क मुंद्रा में बना रहा है, जो 37 गीगाबाइट का एनर्जी पार्क बनेगा। उन्होंने जोड़ा कि कच्छ के मुंद्रा में आगामी पाँच वर्ष के दौरान अदाणी ग्रुप द्वारा 1.50 लाख करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा तथा देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत@2047 के सपने को यह ग्रुप साकार करने के लिए सतत उनके साथ रहेगा।

वेलस्पन के चेयरमैन श्री बी. के. गोयंका की 5000 करोड़ रुपए की लागत से विश्व का सबसे बड़ा पाइपलाइन प्लांट स्थापित करने की घोषणा

वेलस्पन कंपनी के चेयरमैन श्री बी. के. गोयंका ने गौरवपूर्वक कहा कि कच्छ हमारी जन्मभूमि है। एक समय कच्छ-सौराष्ट्र में सबसे बड़ी पानी की समस्या थी, परंतु पिछले दो दशक में सौराष्ट्र-कच्छ की कायापलट हुई है। आज सौराष्ट्र-कच्छ रिफाइनरी पोर्ट तथा सिरेमिक के लिए विख्यात बना है। इस क्षेत्र का विकास पिछले 20 वर्ष में हुआ है, जिसका श्रेय मैं देश के प्रधानमंत्री को देता हूँ। उन्होंने जोड़ा कि आज वेलस्पन एक लाख से अधिक लोगों को रोजगार दे रही है। उन्होंने 2003 की वाइब्रेंट समिट को याद करते हुए कहा कि उस समय मैं वापी में प्लांट लगाने वाला था, परंतु देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मुझसे यह कहा था कि आप अपना प्लांट कच्छ में स्थापित करेंगे, तो आपको एक रुपए के निवेश के सामने एक डॉलर का प्रतिफल मिलेगा। यह बात आज सच्चे अर्थ में सार्थक हुई है। हमारी कंपनी गुजरात में आगामी समय में विश्व के सबसे बड़े पाइपलाइन प्लांट की स्थापना के लिए 5000 करोड़ रुपए का निवेश करेगी।

ज्योति सीएनसी मैन्युफैक्चरिंग तथा आर एंड डी में स्किल क्षेत्र में 10 हजार करोड़ रुपए का निवेश करेगी : पराक्रमसिंह जाडेजा

ज्योति सीएनसी के चेयरमैन पराक्रमसिंह जाडेजा ने राजकोट की धरा पर आयोजित हुई वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस प्रधानमंत्री के विकसित भारत@2047 के सपने को साकार करने वाली समिट है। वाइब्रेंट समिट के माध्यम से गुजरात देश का ग्रोथ इंजन बना है। यह कोई बिजनेस कॉन्फ्रेंस नहीं, बल्कि विकसित भारत का विजन अब क्षेत्र, जिला, स्थानीय औद्योगिक इकोसिस्टम तक पहुँच रहा होने का संकेत है। विश्व में आज अस्थिरतापूर्ण माहौल के बीच भी भारत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दृढ़ एवं स्थिर बनकर खड़ा है और आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा ध्येय बहुत ही स्पष्ट है कि मैन्युफैक्चरिंग केवल बिजनेस नहीं है, बल्कि हमारी जिम्मेदारी है। हमारी कंपनी आगामी पाँच वर्ष में 10 हजार करोड़ रुपए का निवेश करेगी। एयरोस्पेस तथा डिफेंस सेक्टर को भी मशीनरी प्रदान करने के लिए ज्योति सीएनसी तत्पर है। आत्मनिर्भर भारत के लिए हम सब साथ मिलकर इस उम्दा कार्य को आगे बढ़ाने का अभियान चलाएंगे।

भद्रकाली मंदिर के शिलालेख में उत्कीर्णित सोमनाथ का कालजयी इतिहास कुमारपाल के शासन काल तथा सोमनाथ के पुनरुत्थान की जीवंत कथा

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रभास पाटण की यह पवित्र धरती अनेक ऐतिहासिक धरहरों और सभ्यताओं को संजोए बैठी है। यह भूमि कितनी पवित्र, समृद्ध एवं स्वर्णिम अतीत की स्वामी है कि इसके वैभव की यहाँ के ताम्रपत्र, अभिलेख तथा शिलालेख साक्षी देते हैं। आज भी शौर्य गाथा की गर्वपूर्ण रण गर्जना करने वाले नंदी इस भूमि के पराक्रम की गवाही देते हैं। प्रभास पाटण तथा सोमनाथ देवालय के इतिहास को उजागर करने वाले आभिलेखिक प्रमाण, प्रमाणभूत अवशेष प्रभास क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं। सोमनाथ तथा प्रभास क्षेत्र के देदिप्यमान अमर इतिहास के प्रमाण देने वाले शिलालेख और ताम्रपत्र प्रभास पाटण म्यूजियम में संरक्षित हैं। अनेक आक्रमणों से ध्वस्त मंदिर के अवशेष शौर्य, शक्ति एवं समर्पण के जीवंत प्रमाण के रूप में आज भी म्यूजियम में जतन करके रखे हुए हैं। हाल में यह म्यूजियम प्रभास पाटण में पौराणिक सूर्य मंदिर में कार्यरत है।

इस म्यूजियम के अधीनस्थ ऐसा ही एक शिलालेख प्रभास पाटण में म्यूजियम के निकट पुराने राम मंदिर के बगल में भद्रकाली फळिया (मोहल्ले) में स्थित है। सोमपुरा ब्राह्मण दीपकभाई दवे के निवास स्थान पर यह ऐतिहासिक धरोहर संरक्षित है। उनके प्रांगण में स्थित पौराणिक भद्रकाली मंदिर की दीवार पर यह शिलालेख आज भी जड़ित है।

▶▶ प्रभास पाटण की भूमि में संरक्षित पुरातत्वीय प्रमाणों तथा सोलंकी काल का स्थापत्य हमारी अनमोल धरोहर

▶▶ तीर्थभूमि सोमनाथ के पत्थर करते हैं गर्वपूर्ण रण गर्जना, ताम्रपत्रों तथा अभिलेखों में धड़कती सनातन संस्कृति

▶▶ प्रभास पाटण म्यूजियम में संरक्षित हैं प्रभास पाटण तथा सोमनाथ देवालय के इतिहास को उजागर करने वाले आभिलेखिक प्रमाण एवं प्रमाणभूत अवशेष

प्रभास पाटण म्यूजियम क्यूरेटर (संग्रहलायध्यक्ष) श्री तेजल परमार ने विवरण देते हुए बताया कि ई. स. 1169 (वलभी संवत 850 तथा विक्रम संवत 1255) में उत्कीर्णित तथा हाल में राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित यह शिलालेख अणहिलवाड पाटण के महाराजाधिराज कुमारपाल के धर्मगुरु परम पाशुपताचार्य श्रीमद् भावबृहस्पति का प्रशस्ति लेख है। इस अभिलेख में सोमनाथ मंदिर का पौराणिक एवं मध्य कालीन इतिहास लिपिबद्ध है। इस अभिलेख में चारों युगों में सोमनाथ महादेव के निर्माण का उल्लेख है, जिसके अनुसार सतयुग में (चंद्र) सोम ने सोने का, त्रेता युग में रावण ने चांदी का, द्वापर युग में श्री कृष्ण ने काष्ट का और कलियुग में राजा भीमदेव सोलंकी ने सुंदर पाषाण का कलात्मक देवालय बनवाया था।

इतिहास के पन्नों पर दृष्टि डालें, तो मंदिर के पुराने अवशेषों पर भीमदेव सोलंकी द्वारा चौथे मंदिर का निर्माण किए जाने का तथ्य प्रमाणभूत है। इसके बाद ई. स. 1169 में कुमारपाल का पाँचवाँ मंदिर भी उसी स्थान पर बना था। सोलंकी शासकों के काल में प्रभास पाटण केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि स्थापत्य एवं साहित्य का भी केन्द्र था। सिद्धराज जयसिंह की न्यायप्रियता तथा कुमारपाल की धर्मनिष्ठा ने सोमनाथ के शिखर को गौरव के उच्चतम सोपना पर स्थापित किया, जो आज भी गुजरात के स्वर्णिम काल की गरिमापूर्ण प्रतीति कराता है।

प्रभास पाटण की इस पवित्र मृदिंका (धरती) उसके उदर में केवल अवशेषों को ही नहीं, अपितु सनातन धर्म के आत्मगौरव को भी संग्रह किए बैठी है। भद्रकाली फळिया के इस ऐतिहासिक शिलालेख में उत्कीर्णित अक्षरमाला आज भी सोलंकी शासकों के समर्पण एवं भावबृहस्पति जैसे ज्ञानियों के पुरुषार्थ की प्रतीति कराती है। शिल्प, स्थापत्य तथा साहित्य के त्रिवेणी संगम समान यह भूमि उसकी ऐतिहासिक विरासत द्वारा आने वाली पीढ़ियों को हमारे स्वर्णिम अतीत की झाँकी कराती रहेगी। प्रभास की यह देदिप्यमान विरासत तथा सोमनाथ का अजेय शिखर इस बात की प्रबल साक्षी देते हैं कि समय चाहे जितना बलवान हो, परंतु भक्ति तथा स्वाभिमान के शिखर सदैव अविनाशी रहते हैं।

'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने वाली 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस : कच्छ एवं सौराष्ट्र' का राजकोट से भव्य प्रारंभ

▶▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से पाँच दिवसीय बिजनेस एग्जीबिशन का उद्घाटन

▶▶ प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास की प्रेरक उपस्थिति में कच्छ-सौराष्ट्र की औद्योगिक क्षमता तथा कला-कौशल की प्रदर्शनी देखी

▶▶ 18,000 वर्ग मीटर में फैले एग्जीबिशन में 'एंटरप्राइज एक्सीलेंस' से लेकर 'हर घर स्वदेशी' की झाँकी

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को राजकोट के मारवाड़ी विश्वविद्यालयसे 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने वाली 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस : कच्छ एवं सौराष्ट्र' तथा पाँच दिवसीय बिजनेस एग्जीबिशन का गरिमापूर्ण शुभारंभ कराया। क्षेत्रीय आकांक्षाओं के साथ वैश्विक महत्वाकांक्षा के मंत्र को चरितार्थ करने वाले इस आयोजन में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री एवं गृह राज्य मंत्री श्री हर्ष संघवी थथा मुख्य सचिव श्री एम. के. दास आदि महानुभावों की प्रेरक उपस्थिति रही।

उद्घाटन के बाद प्रधानमंत्री ने 18,000 वर्ग मीटर में फैली इस विशाल प्रदर्शनी को देखा। उन्होंने 'एंटरप्राइज एक्सीलेंस पैवेलियन' में हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, एस्सार, न्यारा एनर्जी तथा ज्योति सीएनसी जैसी अग्रणी इकाइयों द्वारा देश के आर्थिक विकास में दिए जा रहे योगदान का निरीक्षण किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने गुजरात की बढ़ती जा रही औद्योगिक शक्ति तथा टेक्नोलॉजिकल प्रगति की प्रशंसा की।

कच्छ एवं सौराष्ट्र के समुद्र तट की असीम क्षमताओं को उजागर करने वाले 'ओशन ऑफ अपॉर्चुनिटीज' पैवेलियन में प्रधानमंत्री ने विशेष रुचि दर्शाई। गुजरात मैरीटाइम बोर्ड द्वारा ब्लू इकोनॉमी के विकास की प्रस्तुति तथा रिलायंस न्यू एनर्जी जैसे स्टॉल्स द्वारा प्रदर्शित नई टेक्नोलॉजी ने आकर्षण जमाया। इस प्रदर्शनी में उद्योग जगत के विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण के समन्वय की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

स्थानीय कला एवं उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए 'हर हर स्वदेशी' के मंत्र के साथ एमएसएमई पैवेलियन तैयार किया गया है। प्रधानमंत्री ने यहाँ ग्रामीण कारीगरों की हस्तकला तथा स्वदेशी हाट को देखा, जहाँ उन्होंने बुक रिव्यू में अपने प्रतिभाव भी दर्ज किए। 15 जनवरी तक चलने वाली यह प्रदर्शनी विद्यार्थियों तथा सामान्य नागरिकों के लिए ज्ञानवर्धक बनी रहेगी और 'विकसित@2047' के लक्ष्य को नई गति देगी।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा संचालित बाल मंदिर एवं किड्स हट स्कूल का वार्षिक समारोह संपन्न

(जीएनएस)। दिनांक 10 जनवरी 2026 को पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO) भावनगर मंडल द्वारा संचालित बाल मंदिर एवं किड्स हट स्कूल का वार्षिक समारोह हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा उपस्थित रहे।

समारोह में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी मौजूद रहे। महिला कल्याण संगठन की ओर से अध्यक्ष श्रीमती शालिनी वर्मा, उपाध्यक्ष श्रीमती मोनिका शर्मा, कोषाध्यक्ष श्रीमती वंदना पाटीदार, सचिव श्रीमती माया त्रिपाठी, स्कूल इंचार्ज श्रीमती सरोज मौर्य एवं श्रीमती वाणी सहित अन्य महिला पदाधिकारी उपस्थित रहीं।

इस अवसर पर दोनों विद्यालयों के लगभग 220 बच्चों ने भाग लिया और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुतियाँ दीं। बच्चों की मनमोहक एवं जीवंत प्रस्तुतियों ने उपस्थित सभी दर्शकों का मन मोह लिया और कार्यक्रम में उत्साह का संचार किया। समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के सभी विजेता प्रतिभागियों को मंडल रेल प्रबंधक द्वारा प्रमाण पत्र एवं ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही दोनों विद्यालयों के कई शिक्षकों को "बेस्ट टीचर अवार्ड" तथा दोनों स्कूलों के प्रधानाचार्यों को "बेस्ट प्रिंसिपल" ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

अपने संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने बच्चों की प्रतिभा की सराहना करते हुए दोनों स्कूलों के बच्चों के लिए 5000/- के पुरस्कार की घोषणा की। कार्यक्रम का समापन उत्साह, उल्लास एवं सकारात्मक ऊर्जा के साथ हुआ। यह पूरा कार्यक्रम पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा की देखरेख में संपन्न हुआ।

सोमनाथ में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आगमन से पूर्व शिव भक्ति तथा देश भक्ति का माहौल

वेरावळ की 10 वर्षीय नन्हीं बालिका जिनल जेठवा ने भारत माता बनकर फहराया तिरंगा, भारत माता की जय के नारे लगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ में हमारी आस्था, संस्कृति तथा विरासत को उजागर करने वाला सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सोमनाथ पधारे हैं, तब मुख्य कार्यक्रम स्थल पर उनके आगमन से पूर्व शिव भक्ति के साथ देश भक्ति के वातावरण का सृजन हुआ।

वेरावळ में कक्षा 4 में पढ़ाई करने वाली 10 वर्षीय नन्हीं बालिका जिनल देवेन्द्रभाई जेठवा ने भारत माता बनकर तिरंगा फहराया। उनकी देश भक्ति देखकर आसपास के लोगों ने भी हर हर महादेव के साथ भारत माता की जय के नारे लगाए। इस अवसर पर मंच से कलाकारों ने 'दिल दिया है, जान भी देंगे...' तथा 'ये देश है वीर जवानों का...' जैसे गीतों से देश भक्ति का माहौल बनाया।

अहमदाबाद मंडल की अपील: उत्तरायण पर्व सुरक्षित रूप से मनाएँ, हाई-वोल्टेज ओवरहेड तारों से दूर रहें

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के सभी रेलखंडों में रेलवे लाइन के ऊपर 25,000 वोल्ट (25 केवी) की ओवरहेड इलेक्ट्रिक (OHE) हाई-वोल्टेज तारें स्थापित हैं। अक्सर देखा गया है कि पतंग उड़ाते समय धागे इन तारों में फँस जाते हैं। कुछ धागों में धातु के अंश या नमी होने के कारण उनमें विद्युत प्रवाह हो सकता है, जिससे करंट नीचे तक पहुँच सकता है। ऐसी स्थिति पतंग उड़ाने वाले व्यक्तियों के साथ-साथ रेलवे ट्रैक के समीप से गुजरने वाले नागरिकों एवं ट्रैक पर कार्यरत रेल कर्मचारियों के लिए भी अत्यंत घातक सिद्ध हो सकती है।

अहमदाबाद मंडल ने जनसामान्य के लिए चलाया सुरक्षा जागरूकता अभियान

अहमदाबाद मंडल द्वारा जनसामान्य के लिए सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत रेलवे पटरियों के आसपास रहने वाले नागरिकों को काउंसलिंग के माध्यम से आवश्यक सावधानियों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

अहमदाबाद मंडल द्वारा जारी मुख्य निर्देश एवं अपील:

1.पटरियों से दूरी बनाए रखें: सुरक्षा एवं कानून की दृष्टि से रेलवे ट्रैक के आसपास पतंग न उड़ाएँ।

2.हाई-वोल्टेज तारों को न छुएँ: यदि पतंग या धागा ओवरहेड तारों में फँस जाए, तो उसे निकालने के लिए किसी भी प्रकार की छड़, डंडे या उपकरण का प्रयोग न करें।

3.बच्चों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दें: अभिभावक यह सुनिश्चित करें कि बच्चे पतंग पकड़ने के लालच में रेलवे ट्रैक की ओर न जाएँ।

4.रेल कर्मचारियों की सुरक्षा: ओवरहेड तारों में फँसे धागे ट्रैक पर कार्यरत रेलकर्मियों के लिए भी गंभीर खतरा उत्पन्न करते हैं।

रेल प्रशासन सभी नागरिकों से अपील करता है कि वे स्वयं सतर्क रहें तथा दूसरों को भी जागरूक करें, ताकि उत्तरायण पर्व को सुरक्षित एवं आनंदमय ढंग से मनाया जा सके। आपकी सतर्कता न केवल आपकी सुरक्षा सुनिश्चित करती है, बल्कि दूसरों के जीवन की रक्षा भी करती है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने महात्मा मंदिर से जूना सचिवालय तक मेट्रो में यात्रा की

(जीएनएस)। गांधीनगर। गुजरात में आधुनिक, सुरक्षित और तेज शहरी परिवहन व्यवस्था को और मजबूत करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने रविवार को गांधीनगर मेट्रो परियोजना के दूसरे चरण के रूट पर मेट्रो ट्रेन में यात्रा की। दोनों नेताओं ने महात्मा मंदिर मेट्रो स्टेशन से जूना सचिवालय तक मेट्रो में सफर कर न केवल इस महत्वाकांक्षी परियोजना की प्रगति का प्रत्यक्ष अनुभव किया, बल्कि आम यात्रियों के साथ संवाद कर मेट्रो सेवा को लेकर उनकी राय और अनुभव भी जाने। मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री के मेट्रो में सफर के दौरान ट्रेन में मौजूद आम नागरिकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों और बुजुर्ग यात्रियों में विशेष उत्साह देखने को मिला। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने यात्रियों से सहज और आत्मीय बातचीत करते हुए पूछा कि मेट्रो सेवा से उन्हें किस प्रकार की सुविधाएं मिल रही हैं, समय की कितनी बचत हो रही है और दैनिक आवागमन में मेट्रो कितनी उपयोगी साबित हो रही है। यात्रियों ने मुख्यमंत्री को बताया कि मेट्रो के शुरू होने से सड़क यातायात पर निर्भरता कम हुई है, ट्रैफिक जाम से राहत मिली है और कम समय में सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा संभव हो पाई है।

विद्यार्थियों ने मेट्रो को उनके लिए अत्यंत उपयोगी बताते हुए कहा कि इससे कॉलेज और कोचिंग तक पहुंचना आसान हो गया है। वहीं, सरकारी कर्मचारियों ने जूना सचिवालय और आसपास के कार्यालयों तक मेट्रो कनेक्टिविटी को समय और ऊर्जा की बचत करने वाला कदम बताया। कई यात्रियों ने मेट्रो की स्वच्छता, नियमितता, वातानुकूलित कोच और आधुनिक सुरक्षा व्यवस्था की भी सराहना की।

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस अंतर्गत 'कार्बन से फसल तक हरित अणु, अधिक उत्पादन' विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ

(जीएनएस)। गांधीनगर : दो दिवसीय वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस अंतर्गत रविवार को 'कार्बन से फसल तक : हरित अणु, अधिक उत्पादन' विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ। इस परिसंवाद का मुख्य उद्देश्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैश्विक जलवायु परिवर्तन तथा बढ़ती जा रही खाद्यान्न की मांग के बीच कृषि क्षेत्र के लिए नवीन एवं टिकाऊ उपयोग और हरित ऊर्जा की ओर प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण बने हैं। कार्बन से फसल तक की विचारधारा ऐसा नूतन दृष्टिकोण है, जिसमें हवा में रहे कार्बन डाइऑक्साइड या उद्योगों से निकलने वाले कार्बन का उपयोग कर खेती के लिए उपयोगी हरित अणु (ग्रीन मोलेक्यूलस) तैयार किए जाते हैं। परिसंवाद में विभिन्न वक्ताओं द्वारा बताया गया कि हरित ऊर्जा संबंधी प्रयासों तथा भविष्य में कैसे प्रयास किए जा सकते हैं तथा कार्बन को जिम्मेदारी नहीं, बल्कि अवसर के रूप में देखकर ग्रीन एनर्जी का स्रोत बनाना चाहिए। इसके अलावा, हरित अणुओं का उपयोग जैव उर्वरक, बायोस्टिम्युलेंट्स, मिट्टी सुधारक तत्व तथा फसल वृद्धि प्रोत्साहक के रूप में होता है। परिणामस्वरूप जमीन की उपज क्षमता में वृद्धि होती है और फसल की जड़ मजबूत बनती है तथा पौधे में पोषक तत्वों का शोषण अधिक प्रभावशाली बनता है। कार्बन आधारित हरित अणुओं के उपयोग से फसल का उत्पादन उल्लेखनीय रूप से बढ़ता है, रासायनिक खाद पर निर्भरता घटती है, जमीन का स्वास्थ्य एवं जीवंतता बने रहते हैं, पानी के उपयोग में कार्यक्षमता बढ़ती है, कृषि अधिक पर्यावरणीय संतुलित तथा टिकाऊ बनती है। यह दृष्टिकोण केवल कृषि उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन घटाने, जलवायु परिवर्तन से लड़ने और किसानों की आय में वृद्धि करने के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार; कार्बन से फसल तक की हरित यात्रा टेक्नोलॉजी तथा आधुनिक खेती का समन्वय साधकर भविष्य की खाद्य सुरक्षा के लिए मजबूत नींव तैयार करती है, जहाँ हरित अणु अधिक उत्पादन का साधन बनते हैं और कृषि विकास का नया अध्याय लिखते हैं। भारत देश के पास विद्यमान ग्रीन एनर्जी तथा ग्रीन हाइड्रोजन क्षमताओं का विस्तार कर भारत के साथ गुजरात को भी इस क्षेत्र में उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए सकारात्मक चर्चाएँ परिसंवाद में की गईं।

चांदोद- एकतानगर रेल खंड की होगी कायापलट तिलकवाड़ा स्टेशन B क्लास स्टेशन बना

(जीएनएस)। डभोई - एकता नगर के बीच चांदोद-एकता नगर खंड के तिलकवाड़ा स्टेशन को वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के कुशल मार्गदर्शन में B क्लास के रूप में कमीशन कर लिया गया है। तिलकवाड़ा स्टेशन का अपग्रेडेशन सिर्फ एक स्टेशन नहीं बल्कि एक 32 किलोमीटर लंबे रेलखंड की काया पलट है।

अब यह स्टेशन साधारण स्टॉपिंग पॉइंट से उन्नत सिग्नलिंग, एक बेहतर ऑपरेशनल क्षमता और अधिक यात्री सुविधाओं वाला स्टेशन बन गया है, जो वडोदरा मंडल की एक बड़ी उपलब्धि है।

तिलकवाड़ा स्टेशन के अपग्रेडेशन से पहले चांदोद - एकतानगर सेक्शन पूरी तरह सैचुरेटेड था यानि अतिरिक्त ट्रेन के परिचालन के लिए संभावना कम थी। 10 जनवरी 2026 को नानइंटरलाकिंग कार्य संपन्न होने से तिलकवाड़ा स्टेशन को नया रूप मिला है। अब यह सिर्फ एक छोटा सा स्टॉप नहीं बल्कि क्रॉसिंग स्टेशन है यहां ट्रेन अब पास हो सकती हैं। इसके लिए एक नई लूप लाइन और दो हाई लेवल प्लेटफार्म का निर्माण किया गया है, जो ट्रैफिक और एफिशिएंसी को बढ़ाते हैं।

तिलकवाड़ा स्टेशन के B क्लास में अपग्रेड होने से अब इस रूट पर ऑपरेशनल एफिशिएंसी, समय की पाबंदी और इस प्रतिष्ठित सेक्शन में और ट्रेनें चलाने की संभावना बेहतर होगी।

तिलकवाड़ा को B-क्लास स्टेशन में बदलने से एकतानगर और चांदोद के बीच मौजूदा सिंगल ब्लॉक सेक्शन दो ब्लॉक सेक्शन में बंट गया है, यानी एकतानगर – तिलकवाड़ा और तिलकवाड़ा –चांदोद। एक साधारण हॉल्ट से एक फंक्शनल ब्लॉक स्टेशन में बदलने से चांदोद और एकतानगर के बीच ट्रेन परिचालन क्षमता बढ़ेगी, जिससे संरक्षा में वृद्धि होगी। साथ ही सेक्शन कैपेसिटी बढ़ने से इस सेक्शन में और अधिक ट्रेनों को परिचालित करने का विकल्प मिलेगा।

भविष्य में, ट्रेनों की संख्या बढ़ने पर, तिलकवाड़ा एक फायदेमंद ऑपरेशनल पॉइंट के तौर पर काम करेगा, जिससे ट्रेन रेगुलेशन और ऑपरेशनल फ्लेक्सिबिलिटी बेहतर होगी। एकतानगर से शुरू होने वाली ट्रेनों का लाईन क्लियर के लिए रुकने का समय कम हो जाएगा, जिससे ऑपरेशन आसान होगा और समय की पाबंदी बेहतर होगी।

B-क्लास स्टेशन बनने से तिलकवाड़ा स्टेशन पर यात्री सुविधाओं में भी इज़ाफा हुआ है, यात्रिओं को स्टेशन पर पैदल ऊपरी पुल, वेटिंग रूम और टिकट काउंटर जैसी सुविधाएँ प्रदान की गई हैं, जिससे यात्रिओं का सफ़र और सुखकर होगा। स्टेशन पर एक हाई-लेवल प्लेटफ़ॉर्म का निर्माण किया गया है, जिससे यात्रियों को ट्रेन में चढ़ने और उतरने के दौरान ज़्यादा सुविधा और सुरक्षा मिलेगी।

अपग्रेड होने से पहले डभोई और एकतानगर के बीच तिलकवाड़ा एक D-क्लास (फ्लैग स्टेशन) स्टेशन था, जहाँ सिर्फ एक प्लेटफॉर्म और कुछ बुनियादी सुविधाएं थी। फ्लैग स्टेशन होने के कारण कोई सिग्नल नहीं था और ऑपरेशन के लिए कोई समर्पित रेलवे स्टाफ नहीं था।

हजार वर्षों की आंधियों के बीच अडिग आस्था की गूंज: सोमनाथ से प्रधानमंत्री मोदी का स्वाभिमान संदेश

(जीएनएस)। सोमनाथ। अरब सागर की लहरों के साक्ष्य में खड़ा सोमनाथ मंदिर एक बार फिर भारत की आत्मा, आस्था और स्वाभिमान की अमर गाथा का केंद्र बना, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर राष्ट्र को इतिहास, चेतना और भविष्य का संदेश दिया। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि गजनी और औरंगजेब जैसे आक्रांता इतिहास के पन्नों में दफन हो चुके हैं, लेकिन सोमनाथ आज भी उतना ही अडिग, उतना ही जीवंत और उतना ही प्रेरक है। उन्होंने कहा कि सोमनाथ मंदिर पर हुए आक्रमण किसी आर्थिक लूट के उद्देश्य से नहीं थे, बल्कि भारत की आस्था, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक चेतना को तोड़ने की कोशिश थे, परंतु हर बार भारत की आत्मा ने उन हमलों को पराजित किया और और भी अधिक दृढ़ होकर खड़ी हुई।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व किसी विनाश की स्मृति का आयोजन नहीं है, बल्कि यह हजार वर्षों तक चले संघर्ष, पुनर्निर्माण और विजय की उस अविरल यात्रा का उत्सव है, जो भारत की पहचान रही है। यह पर्व उस संकल्प का प्रतीक है, जिसने बार-बार टूटने के बाद भी भारत को खड़ा किया, जिसने हर आक्रमण को आत्मबल में बदला और जिसने पराजय को कभी अपनी नियति नहीं बनने दिया। उन्होंने कहा कि इतिहास गवाह है कि सदियों तक विदेशी आक्रांताओं ने भारत और उसकी आस्था को मिटाने का प्रयास किया, लेकिन न तो सोमनाथ झुका और न ही भारत की आत्मा कमजोर हुई।

सद्भावना ग्राउंड में आयोजित विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत और उसकी आस्था एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। भारत की आत्मा उसकी संस्कृति, उसकी परंपराओं, उसके मंदिरों, उसके तीर्थों और उसके मूल्यों में बसती है। सोमनाथ उसी आत्मा का प्रतीक है, जो समय, सत्ता और परिस्थितियों से परे है। उन्होंने कहा कि आज भले ही तलवारें हाथों में न हों, लेकिन साजिशों के स्वरूप बदल गए हैं। आज भी भारत की एकता, उसकी सांस्कृतिक जड़ों और उसके विश्वास को कमजोर करने के प्रयास हो रहे हैं, इसलिए देश को पहले से अधिक सजग, संगठित और शक्तिशाली बनने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री ने सोमनाथ के ऐतिहासिक महत्व को विस्तार से रेखांकित करते हुए कहा कि महमूद गजनी से लेकर औरंगजेब तक अनेक आक्रांताओं ने इस पवित्र स्थल को नष्ट करने का प्रयास किया, लेकिन वे यह समझने में असफल रहे कि सोमनाथ केवल पत्थरों से बना एक मंदिर नहीं है। 'सोमनाथ' शब्द स्वयं अमरता से जुड़ा हुआ है। यह उस चेतना का नाम है, जिसे न तो तोड़ा जा सकता है और न ही मिटाया जा सकता है। हर बार विनाश के प्रयासों के बाद यह मंदिर और अधिक भव्यता, गौरव और आत्मबल के साथ पुनर्निर्मित हुआ। उन्होंने कहा कि 12वीं शताब्दी से लेकर मराठा शासिका अहिल्याबाई होलकर तक, सोमनाथ का इतिहास पराजय का नहीं, बल्कि सतत पुनर्निर्माण और आत्मसम्मान की विजय का इतिहास है।

प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्रता के बाद के दौर का उल्लेख करते हुए कहा कि दुर्भाग्यवश आज़ादी के बाद भी गुलामी की मानसिकता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। कुछ लोगों ने भारत के गौरवशाली इतिहास से दूरी बनाने का प्रयास किया और उसे भुलाने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि जब सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया, तब उसका भी विरोध हुआ। 1951 में जब तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन के लिए पहुंचे, तब भी आपत्तियां जताई गईं। यह विरोध किसी एक कार्यक्रम या व्यक्ति का नहीं था, बल्कि यह भारत की आत्मा और उसके इतिहास से मुंह मोड़ने की मानसिकता का प्रतीक था, जिसे देश ने कभी स्वीकार नहीं किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण स्वतंत्र भारत के आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की घोषणा था। यह उस भारत का संदेश था, जो अपने अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य की ओर बढ़ना चाहता था। यह केवल एक मंदिर का पुनर्निर्माण नहीं था, बल्कि यह उस विश्वास की पुनर्स्थापना थी, जिसने भारत को सदियों तक जीवित रखा। उन्होंने कहा कि आज जब देश आज़ादी के अमृत काल में प्रवेश कर चुका है, तब हमें अपने इतिहास को बोझ नहीं, बल्कि शक्ति के स्रोत के रूप में देखना होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि सोमनाथ मंदिर की शिखर पर लहराती धर्मध्वजा केवल एक ध्वज नहीं है, बल्कि यह भारत की आध्यात्मिक शक्ति, सांस्कृतिक सामर्थ्य और अडिग संकल्प का संदेश देती है। यह ध्वजा पूरे विश्व को बताती है कि भारत की आस्था को न तो तलवारों से हराया जा सकता है और न ही षड्यंत्रों से। उन्होंने कहा कि हजार वर्ष पूर्व जिन लोगों ने अपनी आस्था और विश्वास की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी, उनका बलिदान आज भी भारत को मार्ग दिखा रहा है।

अपने संबोधन की शुरुआत में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पवित्र सोमनाथ मंदिर में इस महापर्व का साक्षी बनना उनके जीवन के सबसे अविस्मरणीय क्षणों में से एक है। उन्होंने कहा कि आज मंदिर के पुनर्निर्माण के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं और यह वही पावन भूमि है, जहां से भारत के स्वाभिमान की नई यात्रा ने स्वतंत्रता के बाद गति पकड़ी थी। उन्होंने कहा कि सोमनाथ हमें यह सिखाता है कि चाहे कितनी भी बड़ी विपत्तियां क्यों न आएं, यदि आस्था अटूट हो और संकल्प दृढ़ हो, तो कोई शक्ति हमें झुका नहीं सकती।

प्रधानमंत्री ने आह्वान किया कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व को केवल एक दिन या एक आयोजन तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे मई 2027 तक एक निरंतर उत्सव के रूप में मनाया जाए। उन्होंने कहा कि यह कालखंड सोमनाथ की हजार वर्षों की ऐतिहासिक यात्रा और 75 वर्षों के पुनर्निर्माण का प्रतीक है। इस उत्सव के माध्यम से देश की नई पीढ़ी को अपने गौरवशाली इतिहास से जोड़ना आवश्यक है, ताकि वे यह समझ सकें कि भारत की पहचान केवल वर्तमान उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसके हजारों वर्षों के आत्मसंघर्ष और आत्मबल से बनी है।

इससे पूर्व प्रधानमंत्री मोदी ने सोमनाथ मंदिर में लगभग 40 मिनट तक विधिवत पूजा-अर्चना की। उन्होंने शिवलिंग पर जल, पुष्प और पंचामृत से अभिषेक किया और मंत्रोच्चार के बीच भगवान सोमनाथ से देश की शांति, समृद्धि और प्रगति की कामना की। उन्होंने मंदिर परिसर में उपस्थित पुजारियों, संतों और स्थानीय कलाकारों से संवाद किया और पारंपरिक चेंदा वाद्य बजाकर शोभायात्रा में भी सहभागिता निभाई। पूरा वातावरण भक्ति, गौरव और स्वाभिमान की भावना से ओतप्रोत दिखाई दिया।

उल्लेखनीय है कि 1026 ईस्वी में सोमनाथ मंदिर पर हुए प्रथम आक्रमण की सहस्राब्दी के अवसर पर यह भव्य 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' आयोजित किया जा रहा है। यह आयोजन केवल इतिहास को स्मरण करने का प्रयास नहीं है, बल्कि उस चेतना को जागृत करने का माध्यम है, जिसने भारत को सदियों तक जीवित, जाग्रत और अडिग बनाए रखा। प्रधानमंत्री के शब्दों में, सोमनाथ न कभी झुका था, न आज झुका है और न ही कभी झुकेगा, क्योंकि जब तक भारत की आस्था जीवित है, तब तक उसकी आत्मा अडिग रहेगी और उसका स्वाभिमान अमर बना रहेगा।

पश्चिम मिदनापुर में सियासी उबाल, शुभेंदु अधिकारी के काफिले पर हमले से गरमाई बंगाल की राजनीति

(जीएनएस)। कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बार फिर टकराव खुलकर सामने आ गया है। पश्चिम मिदनापुर जिले में शनिवार रात विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी के काफिले पर कथित पथराव और हमले की घटना ने राज्य की कानून-व्यवस्था, राजनीतिक हिंसा और प्रशासन की भूमिका को लेकर नई बहस छेड़ दी है। इस घटना के बाद भारतीय जनता पार्टी ने सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस पर सीधे तौर पर गंभीर आरोप लगाए हैं, जबकि तृणमूल कांग्रेस ने इन आरोपों को राजनीति से प्रेरित बताते हुए खारिज कर दिया है। पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या पश्चिम बंगाल में राजनीतिक मतभेद अब हिंसा की शक्ल ले रहे हैं।

जानकारी के अनुसार, शुभेंदु अधिकारी शनिवार को पुरुलिया जिले में एक जनसभा को संबोधित करने के बाद सड़क मार्ग से कोलकाता लौट रहे थे। रात लगभग साढ़े आठ बजे उनका काफिला पश्चिम मिदनापुर के चंद्रकोणा रोड इलाके के बाजार क्षेत्र से गुजर रहा था। इसी दौरान अचानक कुछ लोगों ने रास्ता रोकने की कोशिश की और देखते ही देखते काफिले पर पथराव और तोड़फोड़ शुरू हो गई। भाजपा का दावा है कि हमलावर लाठी-डंडों और लोहे की छड़ों से लैस थे और उन्होंने काफिले में शामिल कई वाहनों को निशाना बनाया। इस घटना का एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें अफरातफरी का माहौल और क्षतिग्रस्त वाहन दिखाई दे रहे हैं। स्वयं शुभेंदु अधिकारी ने इस वीडियो के जरिए दावा किया कि यह हमला सुनियोजित था और उनका उद्देश्य डर फैलाना तथा राजनीतिक दबाव बनाना था।

घटना के तुरंत बाद सबसे बड़ा सवाल पुलिस की भूमिका को लेकर उठा। शुभेंदु अधिकारी का आरोप है कि मौके पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने हालात को काबू में करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया और हमलावरों को रोकने का प्रयास तक नहीं किया। उनका कहना है कि यदि केंद्रीय सुरक्षा बल समय रहते सक्रिय नहीं होते, तो स्थिति और ज्यादा बिगड़ सकती थी। इस कथित पुलिस निष्क्रियता के विरोध में शुभेंदु अधिकारी चंद्रकोणा रोड स्थित पुलिस चौकी पहुंचे और वहीं धरने पर बैठ गए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जब तक इस मामले में प्राथमिकी दर्ज नहीं की जाती और आरोपियों की गिरफ्तारी की प्रक्रिया शुरू नहीं होती, तब तक वे वहां से नहीं हटेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि वे केवल औपचारिक शिकायत पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे, बल्कि एफआईआर नंबर, लगाई गई धाराओं और दर्ज कार्रवाई की लिखित जानकारी मिलने के बाद ही कोई दस्तावेज स्वीकार करेंगे। इस घटना ने भाजपा को राज्य सरकार पर हमला बोलने का एक और मौका दे दिया। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार ने इस हमले को "राज्य प्रायोजित हिंसा" करार दिया। उन्होंने कहा कि यह घटना दर्शाती है कि पश्चिम बंगाल में लोकतांत्रिक संस्थाओं और निर्वाचित जनप्रतिनिधियों की सुरक्षा तक सुनिश्चित नहीं है। उनका आरोप है कि पुलिस सत्तारूढ़ दल के दबाव में काम कर रही है और विपक्षी नेताओं को जानबूझकर असुरक्षित छोड़ा जा रहा है। मजूमदार ने कहा कि अगर विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के काफिले पर इस तरह हमला हो सकता है, तो आम नागरिकों की सुरक्षा की स्थिति का अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है। उन्होंने केंद्र सरकार से इस मामले में हस्तक्षेप करने और राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा करने की मांग भी दोहराई।

भाजपा नेताओं का कहना है कि यह कोई पहली घटना नहीं है। उनके अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में राज्य में विपक्षी नेताओं, कार्यकर्ताओं और समर्थकों पर हमलों की कई घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें या तो कार्रवाई नहीं हुई या फिर मामले को कमजोर धाराओं में दर्ज कर दबा दिया गया। भाजपा का आरोप है कि यह एक रणनीति के तहत किया जा रहा है ताकि विरोध की आवाज को दबाया जा सके और डर का माहौल बना रहे। शुभेंदु अधिकारी ने भी कहा कि वे इस तरह के हमलों से डरने वाले नहीं हैं और बंगाल की जनता के मुद्दों को उठाते रहेंगे।

दूसरी ओर, तृणमूल कांग्रेस ने भाजपा के आरोपों को पूरी तरह नकारते हुए कहा है कि यह घटना किसी राजनीतिक साजिश का परिणाम नहीं, बल्कि स्थानीय लोगों की नाराजगी का नतीजा हो सकती है। तृणमूल नेताओं का कहना है कि भाजपा अक्सर हर घटना को राजनीतिक रंग देकर माहौल बिगाड़ने की कोशिश करती है। उनका दावा है कि इलाके में कुछ स्थानीय मुद्दों को लेकर पहले से तनाव था और उसी दौरान यह घटना घटी। तृणमूल कांग्रेस ने यह भी आरोप लगाया कि भाजपा नेता खुद को पीड़ित दिखाकर राजनीतिक सहानुभूति बटोरना चाहते हैं।

पुलिस प्रशासन की ओर से फिलहाल संयमित बयान सामने आया है। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का कहना है कि पूरे मामले की जांच की जा रही है और उपलब्ध वीडियो फुटेज, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान तथा अन्य साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की जाएगी। पुलिस का दावा है कि कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए गए हैं और किसी को भी कानून हाथ में लेने की इजाजत नहीं दी जाएगी। हालांकि पुलिस के इस बयान से भाजपा संतुष्ट नजर नहीं आ रही और उसका कहना है कि जब तक ठोस कार्रवाई जमीन पर दिखाई नहीं देती, तब तक ऐसे आश्वासन केवल औपचारिकता हैं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सभा में जनउत्साह का अनोखा दृश्य

सोमनाथ निवासी दक्षाबेन परमार स्वयं द्वारा बनाए गए विशेष चित्रों को लेकर प्रधानमंत्री की सभा में पहुंचीं

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत आयोजित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सभा में जनसैलाब उमड़ पड़ा। समग्र सभा स्थल पर भक्ति, गौरव और राष्ट्रभावना का अनोखा संगम देखने को मिला।

इस अवसर पर सोमनाथ निवासी दक्षाबेन परमार विशेष रूप से तैयार किए गए चित्रों को लेकर पहुंची थीं। उन्होंने पीएम की माता हीराबा और प्रधानमंत्री का पेंसिल स्केच तथा अन्य एक चित्र तैयार किया था। उन्होंने इन चित्रों के माध्यम से प्रधानमंत्री के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

उन्होंने भावुक होकर कहा कि आज इस बात का गौरव दोगुना हो गया कि उनका जन्म सोमनाथ की पवित्र भूमि पर हुआ है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अडिग स्वाभिमान और राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक सोमनाथ क्षेत्र तथा प्रभास की धरती को वैश्विक स्तर पर विशेष गौरव प्राप्त हुआ है।

सोमनाथ की बेटी के तौर पर श्रीमती दक्षाबेन परमार ने प्रधानमंत्री के प्रति आभार और कृतज्ञता व्यक्त की।

इस अवसर पर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का महात्म्य और अधिक उजागर हुआ और उपस्थित जनसमूह में गौरव की भावना देखने को मिली।

केसरी साफे में सुसज्जित बुजुर्गों ने प्रधानमंत्री के प्रति आदर-सम्मान के साथ ही स्वाभिमान और शौर्य का भाव व्यक्त किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ में आयोजित शौर्य स्वाभिमान सभा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति वरिष्ठ नागरिकों का अनोखा भाव और उत्साह देखने को मिला।

वेरावल के सीनियर सिटीजन्स ट्रस्ट के 65 से अधिक बुजुर्ग एक जैसा केसरी साफा बांधकर शौर्य स्वाभिमान सभा में मौजूद रहे और प्रधानमंत्री के स्वागत-सम्मान के साथ राष्ट्रभावना को अभिव्यक्त किया। इस अवसर पर सीनियर सिटीजन्स ट्रस्ट वेरावल के अध्यक्ष श्री दीपकभाई टीलावत ने कहा "सोमनाथ की पवित्र भूमि पर इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने का हमें गर्व है। प्रधानमंत्री के प्रति आदर और सम्मान व्यक्त करने के लिए हम सभी ने केसरी साफा बांधकर उनका स्वागत-सत्कार करने का निश्चय किया है।"

शौर्य, स्वाभिमान और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक इस सभा में वरिष्ठ नागरिकों की उत्साहपूर्ण मौजूदगी ने पूरे वातावरण को गौरवपूर्ण और प्रेरणादायी बना दिया।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व : शौर्य सभा

शौर्य सभा में लोगों ने प्लेकार्ड दिखाकर भारतीय अस्मिता के प्रतीक सोमनाथ की गाथा को अनूठे तरीके से उजागर किया

- प्लेकार्ड के माध्यम से प्रधानमंत्री के विजन और विकसित भारत के संकल्प का प्रेरक संदेश भी फैलाया
- लोगों ने अपने प्रिय नेता और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आगमन पर प्रेरक प्लेकार्ड ऊंचा कर उनका स्वागत किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत रविवार को आयोजित शौर्य सभा में उत्साह से लबरेज लोगों ने सोमनाथ और भारत के शौर्य एवं संकल्प को प्लेकार्ड के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

सभा में मौजूद लोगों ने 'शाश्वत और अविनाशी सोमनाथ', 'अखंड भारत-अखंड सोमनाथ', 'शौर्य एवं साहस की गाथा', 'संकल्प और स्वाभिमान की गाथा', 'लौह पुरुष की संकल्प गाथा' और 'आस्था अमर है' जैसे संदेश देने वाले प्लेकार्ड दिखाकर भारतीय अस्मिता के प्रतीक सोमनाथ की गाथा को उजागर किया।

इसके अलावा, लोगों ने आधुनिक भारत के संकल्प को चरितार्थ करने वाले प्लेकार्ड के माध्यम से प्रेरक संदेश भी फैलाया, जिन पर तरह-तरह के स्लोगन लिखे हुए थे, जैसे कि- 'विकसित भारत-2047', 'सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय', 'आत्मनिर्भर युवा और आत्मनिर्भर भारत' और 'मेरी धरती-मेरा प्रोडक्ट'। ये सभी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन को उजागर करते हैं।

इस शौर्य सभा में उपस्थित लोगों ने अपने प्रिय नेता और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आगमन पर प्लेकार्ड को ऊंचा कर हर्षोल्लास के साथ उनका स्वागत किया।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व की भव्य शौर्य यात्रा में शामिल हुए लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सड़क पर खड़े हजारों लोगों ने 'हर हर महादेव' और 'जय सोमनाथ' के जयघोष के साथ प्रधानमंत्री का स्वागत किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी रविवार को सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत भव्य शौर्य यात्रा में शामिल हुए। इस दौरान सोमनाथ के शंख सर्कल पर उपस्थित हजारों लोगों ने 'हर हर महादेव' और 'जय सोमनाथ' के दिव्य जयघोष के साथ प्रधानमंत्री का पुष्पों से स्वागत किया। प्रधानमंत्री ने शंख सर्कल से हमीरसिंह सर्कल तक सड़क पर खड़े विराट जनसमूह का अभिवादन स्वीकार किया। सोमनाथ के इतिहास की यह सबसे बड़ी शौर्य यात्रा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का भी प्रतीक बन गई।

रूट पर विभिन्न राज्यों के कलाकारों ने भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत के रूप में विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। इस मौके पर प्रधानमंत्री के साथ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्षभाई संघवी, प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी और शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा भी मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की शौर्य सभा में रातधर गांव की बिटिया कोमल सोलंकी ने प्लेकार्ड के जरिए ऑपरेशन सिंदूर की शौर्य गाथा को कलात्मक तरीके से उजागर किया

- ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के जिक्र के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का बनाया सुंदर स्केच
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी निःस्वार्थ भाव तरीके से और बिना किसी भेदभाव के राष्ट्र की प्रगति के लिए कठोर परिश्रम कर रहे हैं : बेटी ज्योति सोलंकी ने प्रधानमंत्री के लिए अपना अनन्य भाव व्यक्त किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अनन्य प्रशंसक नन्ही बिटिया कु. ज्योति सोलंकी रविवार को सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत आयोजित शौर्य सभा में पहुंचीं। तालाला तहसील के रातीधार गांव की इस बेटी ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के उल्लेख के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का एक कलात्मक स्केच बनाकर इस शौर्य सभा में उत्साह के साथ प्रदर्शित किया।

कक्षा 10 में पढ़ाई करने वाली ज्योति ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी निःस्वार्थ भाव तरीके से और बिना किसी भेदभाव के राष्ट्र की प्रगति के लिए कठोर परिश्रम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने देश को सुरक्षित रखने और आतंकवाद से बचाने के लिए सफलतापूर्वक ऑपरेशन सिंदूर चलाया, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने यह स्केच बनाया है।

उल्लेखनीय है कि इस प्लेकार्ड में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के चित्र के साथ कलात्मक रूप से 'ऑपरेशन सिंदूर' लिखा हुआ है, जो भारतीय सेना के शौर्य का प्रतीक है। साथ ही, इसमें ऑपरेशन सिंदूर के शुरू होने की तारीफ भी लिखी हुई है।

इस शौर्य सभा में उपस्थित विशाल जनसमूह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ऊर्जावान और प्रेरक संबोधन को बड़ी ही दिलचस्पी और गौर से सुना।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा मंदिर से गांधीनगर मेट्रो रेल प्रोजेक्ट, फेज-2 का शुभारंभ किया

महात्मा मंदिर, सेक्टर-24, सेक्टर-16, जूना सचिवालय, अक्षरधाम, सचिवालय और सेक्टर-10 सहित कुल 7 मेट्रो रेल स्टेशनों का हुआ उद्घाटन

(जीएनएस)। गांधीनगर, : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को गांधीनगर में मेट्रो रेल प्रोजेक्ट फेज-2 के अंतर्गत महात्मा मंदिर मेट्रो स्टेशन से मेट्रो रेल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

गांधीनगर के नागरिकों के लिए गौरवपूर्ण इस क्षण के साथ शहर के आधुनिक परिवहन माध्यम में वृद्धि हुई है। इस प्रोजेक्ट के तहत महात्मा मंदिर, सेक्टर-24, सेक्टर-15, जूना सचिवालय, अक्षरधाम, सचिवालय और सेक्टर-10 सहित कुल 7 मेट्रो रेल स्टेशनों का उद्घाटन होने से 7.8 किलोमीटर लंबाई का मेट्रो मार्ग अब आम जनता के लिए खुल गया है।

प्रतिदिन बड़ी संख्या में यात्री नौकरी, व्यापार और पढ़ाई के लिए अहमदाबाद से गांधीनगर के बीच आवागमन करते हैं। अब इन यात्रियों को मोटेरा से महात्मा मंदिर तक कुल 28.25 किमी लंबाई वाले मेट्रो रूट के जरिए तेज, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा की सुविधा उपलब्ध होगी।

इसके साथ ही, दोनों शहरों के बीच कनेक्टिविटी बेहतर होगी तथा यातायात के दबाव में कम आएगी। यह प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री की दृष्टि के तहत आत्मनिर्भर भारत और आधुनिक शहरी परिवन के स्वप्न को साकार करने वाला गुजरात के विकास में महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' अब 15 जनवरी चलेगा

श्रद्धालुओं की भक्ति और भारी भीड़ को ध्यान में रखकर राज्य सरकार ने लिया निर्णय

इस दौरान कलाकारों की प्रस्तुति सहित अनेक परंपरागत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे : प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से सोमनाथ में 8 से 11 जनवरी के दौरान 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का भव्य आयोजन किया गया। रविवार, 11 जनवरी को प्रधानमंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में कई कार्यक्रम हुए।

प्रधानमंत्री ने आज अपने वक्तव्य में भी लोगों की श्रद्धा, आस्था और भगवान भोलेनाथ के प्रति अटूट श्रद्धा को ध्यान में रखकर इस आयोजन की अवधि को लेकर ऐसा भाव व्यक्त किया था कि अधिक से अधिक लोग इसका लाभ ले सकें। राज्य सरकार ने लोगों की भावनाओं और मांगों को ध्यान में रखकर इस पर्व को 15 जनवरी तक बढ़ाने का निर्णय किया है।

राज्य सरकार के प्रवक्ता एवं कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने इस संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री की प्रेरक उपस्थिति में सोमनाथ में 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' ऐतिहासिक रूप से मनाया जा रहा है।

इस पर्व के तहत प्रधानमंत्री की प्रेरक उपस्थिति में आयोजित 'शौर्य यात्रा' में एक लाख से अधिक लोग शामिल हुए और भगवान शिव की भक्ति में लीन दिखे।

8 से 11 जनवरी तक जिस प्रकार से कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, उसी श्रृंखला में अब 15 जनवरी तक इस अटूट श्रद्धा के 1000 वर्षों का उत्सव मनाया जाएगा, जिसमें देश भर के श्रद्धालु शामिल होंगे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व और उप मुख्यमंत्री श्री हर्षभाई संघवी के मार्गदर्शन में राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों सहित समूचे प्रशासन के सफल प्रयासों के कारण ही यह पर्व सफल रहा है।

भक्तिमय वातावरण में श्रद्धालुओं को अनेक परंपरागत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के साथ रोशनी का रोमांच भी देखने को मिलेगा।

इस पर्व के अंतर्गत प्रधानमंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में 72 घंटे का अखंड ओंकार नाद, 3000 ड्रोन का मेगा शो और 108 अश्वों की शौर्य यात्रा सहित विभिन्न राज्यों से सोमनाथ पहुंचे कलाकारों की अनेक प्रस्तुतियां आकर्षण का केंद्र बनीं।

भारतीय संस्कृतिक की धरोहर को पुनःस्थापित करने वाले इस धार्मिक समारोह का देश भर के अधिक से अधिक लोग आनंद ले सकें, इसके लिए राज्य सरकार ने इस पर्व को 15 जनवरी तक बढ़ाने का निर्णय लिया है।